ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26 | सितम्बर -II-2024 | अंक - 12 | माउण्ट आबू | Rs.-12

निःस्वार्थ स्नेह और ईश्वरीय प्रेम का अनुभव होता है यहाँ : महामंडलेश्वर श्री देवानंद सरस्वती

हरिद्वार-उत्तराखंड। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आयोजित संत संगोष्ठी में परमहंस आचार्य ब्रह्मनिष्ट महामंडलेश्वर श्री देवानंद सरस्वती जी महाराज ने कहा कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की एकता, प्रेम, और सेवा भाव से मैं बहुत-बहुत प्रभावित हूँ। मुझे यहां आकर अपनेपन का अनुभव होता है। निःस्वार्थ स्नेह का अनुभव होता है। ईश्वरीय प्रेम का अनुभव होता है। इसलिए मैं बार-बार आता हूँ और बहनों से राखी बंधवाता हूँ। मैं बहनों की तथा इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति की मंगल कामना करता हूँ।

महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. मुक्तानंद पुरी जी महाराज ने कहा कि शास्त्रों में वैसे तो बहुत सारी परंपराएं हैं लेकिन जो गुरुकुल की परंपरा हमारे देश में थी जिससे हमारा देश विश्व के लिए एक आध्यात्मिक दिशा दिखाने का स्थान था। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सेवा भाव जैसा गुरुकुल में होता था, यहां पर भी मैंने देखा। यहां पर ज्ञान-विज्ञान की बातें भी हैं। मैं बहनों से आशीर्वाद लेने के लिए यहां पर आया हूँ और बहनों द्वारा रक्षासूत्र बंधवाकर मुझे गर्व महसूस होता है। महामंडलेश्वर स्वामी कर्ण पाल गिरि जी महाराज ने कहा कि मुझे इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने वहां पर उनकी दिव्यता, एकता और ईश्वरीय प्रेम का अनूठा संगम देखा।

महामंडलेश्वर प्रबोधानंद गिरि जी महाराज ने कहा कि आज हम रक्षाबंधन तो मनाते हैं लेकिन रक्षाबंधन का क्या भाव है और उसकी क्या भावनाएं होनी चाहिए उस भाव और भावनाओं से रक्षाबंधन नहीं मनाया जाता। हमने विदेशी संस्कृति को बहुत कॉपी किया है। उनका अनुसरण करते हैं तो हमारी दुर्गति होना तो निश्चित है। उन्होंने कहा कि जब ब्रह्माकुमारी बहनें राखी बांधें तो उसी भाव से ईश्वरीय भावना से राखी बंधवाना, तो यह रक्षाबंधन मनाना सार्थक हो जाएगा।

महामंडलेश्वर स्वामी अभिषेक चैतन्य जी महाराज ने कहा कि आज का मनुष्य अर्थ, काम और राजनीति के पीछे पड़ा हुआ है लेकिन ये भूल गया है कि हमारी संस्कृति की जड़ें जब तक मज़बूत नहीं होंगी तब तक हमारा समाज मज़बूत नहीं हो सकता है। यह कार्य ब्रह्माकुमारी बहनें बखूबी कर रही हैं।

नई दिल्ली। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं संस्थान के अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आनंद भाई तथा ब्र.कु. निकिता।

ब्रह्माकुमारीज़ के हरिद्वार सेवाकेंद्र पर रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में संत संगोष्ठी का सुंदर आयोजन

ब्र.कु. मंजू दीदी ने दादी जी का पत्र पुष्प सभी को पढ़कर सुनाया और मधुबन से दादी जी की भेजी हुई राखी सभी को दिखाई और सभी सन्त महात्माओं की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा। सभी को मीठा बोलने का प्रतीक मिठाई खिलाकर मुख मीठा कराया गया।

इस अवसर पर ब्र.कु. सुशील भाई व ब्र.कु. मीना दीदी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में हरिद्वार के 30 महामंडलेश्वर, संत-महात्मायें शामिल हुए।

रक्तदान से मिलता औरों को जीवनदान- आचार्य बालकृष्ण महाराज

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 17वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

605 रक्तवीरों ने किया रक्तदान

शांतिवन। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 17वें पुण्य स्मृति दिवस(विश्व बंधुत्व दिवस) के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें देशभर से आए 605 ब्र.कु. भाई-बहनों ने रक्तदान किया। शिविर के शुभारंभ पर पहुंचे पतंजलि आयुर्वेद के आचार्य बालकृष्ण महाराज ने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है। जो युवा स्वस्थ हैं उन्हें ज़रूर रक्तदान करना चाहिए। हर एक व्यक्ति रक्तदान का संकल्प करे तो देश में हर साल रक्त की कमी से होने वाली लाखों मौतों को टाला जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह संस्था नारी शक्ति और सशक्तिकरण की मिसाल है। नारी शक्ति ने एकजुट होकर पूरे विश्व में अध्यात्म का परचम लहराया है। यहाँ भाई-बहनें बड़े ही सेवाभाव से सेवा करते हैं जो अनुकरणीय है। इस दौरान उन्होंने शांतिवन का अवलोकन भी किया। मल्टीमीडिया निदेशक ब्र.कु. करुणा भाई ने कहा कि यह संस्था हर क्षेत्र में अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी निभा रही है। समय प्रति समय रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है। इससे रक्त की कमी को दूर करने में मदद मिली है।

ग्लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने बताया कि ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर माउण्ट आबू और ट्रॉमा सेंटर आबू रोड द्वारा शिविर का आयोजन किया गया है। मेडिकल विंग के सचिव डॉ. ब्र.कु. बनारसी लाल शाह ने कहा कि आज युवाओं में रक्तदान को लेकर उत्साह देखा जा रहा है। अब लोग रक्तदान को लेकर जागरुक हो रहे हैं।

दादी प्रकाशमणि का पुण्य स्मृति दिवस विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 17वें पुण्य स्मृति दिवस पर देशभर से पहुंचे हज़ारों लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित कर उनकी शिक्षाओं को याद किया। भारत सहित विश्व के 137 देशों में पुण्य स्मृति दिवस, विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया गया। संस्थान के आठ हज़ार सेवाकेंद्रों पर अलसुबह से रात तक योग-साधना का दौर जारी रहा।

शांतिवन में दादी की स्मृति में बने प्रकाश स्तम्भ पर संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, महासचिव ब्र.कु. निर्वैर भाई, अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई सहित अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

डायमण्ड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. निर्वैर भाई ने कहा कि दादी नारी शक्ति का वह प्रदीप्त मान सितारा थीं जिनके ज्ञान के प्रकाश की रोशनी आज भी अध्यात्म के पथिकों की राह प्रशस्त कर रही है। ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि दादी और बाबा की प्रेरणा से यह डायमण्ड हॉल बनकर तैयार हुआ। ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी का जीवन नारी शक्ति स्वरूप का जीवंत मिसाल था।

पुष्पांजलि अर्पित कर सबने किया दादी को याद

137 देशों में आठ हज़ार सेवाकेंद्रों पर अलसुबह से योग-साधना के हुए कार्यक्रम

मल्टीमीडिया निदेशक ब्र.कु. करुणा भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. शशि दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ दिल्ली पांडव भवन की ब्र.कु. पुष्पा दीदी, यूएसए की डॉ. ब्र.कु. हंसा बहन, ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई, डॉ. प्रताप मिड्ढा एवं डॉ. सतीश गुप्ता सहित हज़ारों लोग मौजूद रहे। संचालन प्रयागराज की ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने किया।

सहज राजयोग से सहज परिवर्तन ही ज्वाला स्वरूप योग

ज्वाला भस्म भी करती, तो ज्वाला परिवर्तन भी करती। अग्नि को देखें तो सब किचड़े को भस्म करती है और वही अग्नि परिवर्तन भी करती है। साइंस के साधनों ने भी यह सिद्ध किया है और हम भी देखते हैं, सबसे कॉमन चीज़ जो खाना खाते हैं उसको पकाने का काम कौन करता है, अग्नि ना। आग ही करती है ना। कच्चे को पक्के में बदलना, यह भी आग का ही काम है। जैसे कच्ची ईंट होती है, उसको पक्की बनाने का काम भी आग का ही है। माना कि कच्चे को पक्का करने की परिवर्तन शक्ति आग में है। आध्यात्मिक रीति से अग्नि के ज्वालामुखी रूप को देखें तो उसमें भी भस्म कर परिवर्तन करने की शक्ति है। पुराने पाप कर्म को भस्म कर उसे परिवर्तन कर श्रेष्ठ बनाने की ताकत उसमें है। जब तक ज्वाला स्वरूप की आग न हो, तब तक परिवर्तन होना कठिन है।

हमने बाबा की एक छोटी-सी अवज्ञा की, मान लो कि हमने मुरली मिस की, है तो छोटी बात लेकिन अवज्ञा तो हुई ना! ये छोटा पाप भी बड़ा हो जाता है। क्योंकि जैसे हमें बाबा ने बताया है एक कदम में पदम है। तो एक का पदमगुणा, अंतर है ना! तो प्राप्ति भी इतनी ही है। और कदम में पदम, तो उसके विपरीत अवज्ञा की ओर कदम बढ़ाये तो उसका भी तो उल्टा पदम होगा ना! क्योंकि अवज्ञा किसकी हुई? भगवान की ना! तो भगवान की अवज्ञा को हम साधारण समझें तो वो किसके खाते में जायेगा! उसी तरह मानो हमने साधारण रीति से किसी के सम्बंध में सुना और वो बात हमने भी दूसरों को कह दी। जिसके प्रति कही उसकी गति क्या होगी! वह जब सुनेंगे, इसने हमारे लिए ऐसा कहा। उसने यह कहा। हमने तो साधारण रीति से कहा था, लेकिन थोड़ा-सा, हल्का-सा पाप हो गया ना। किसी की भी ग्लानि कर दी, किसी की इंसल्ट कर दी, किसी को अपशब्द बोल दिये, किसी को बुरी नज़र से देख लिया। गलती हमारी है, हमारी दृष्टि खराब है, तो उसका पाप तो बनेगा ना! और हमारा जो पैरामीटर है तौल का, वो 'एक का पदम' का है। तो ऐसे छोटे-छोटे पाप जाने-अनजाने में हम करते रहते हैं तो उसके कितने पदम का हिसाब हो जाता है! तो परमात्मा ने हमें बताया है, श्रीमत से उल्टे चलना, तो उसका भी तो हिसाब होगा ना! चलो थोड़ी-सी बीमारी आई, बुखार आया, हमने मुरली मिस कर दी। मुरली मिस की, वो तो है ही, लेकिन बुखार उतर जाने के बाद फिर जो सुस्ती आती है, अलबेलापन आता है और फिर हम अवज्ञा करते हैं। ये जो सूक्ष्म में पाप के जर्म्स हैं जो कि हमें बोझिल करते हैं, मन को भारी करते हैं, अवस्था को स्थिर से वंचित करते हैं, एकाग्रता को भंग करते हैं, उससे क्या होता है, कई बार हमारा स्वास्थ्य ठीक होने पर भी मन बाबा में नहीं लगता, योग नहीं लगता, इसका कारण यही है, सूक्ष्म में होने वाली अवज्ञायें। तो बाबा कहते हैं कि ज्वाला स्वरूप माना जो परमात्मा ने हमारे लिए दिनचर्या बनाई है उसमें एक्यूरेट चलने की हिम्मत रखना। उसमें कहीं न कहीं अवज्ञा होती है तो ज्वाला स्वरूप तो नहीं हुए ना! अवज्ञा माना ही हम जिस राह पर हैं उससे अ-जागरुक हैं। तो जो होना चाहिए वो नहीं हो रहा है माना कि परिवर्तन भी नहीं होगा और न ही हल्के हो रहे हैं। पाप भी भस्म नहीं हो रहा और परिवर्तन भी नहीं होता है। तो इसीलिए बाबा कहते हैं, ज्वाला स्वरूप योग होना ज़रूरी है और वर्तमान समय इसी की आवश्यकता है। हम विश्व परिवर्तन करने वाले हैं, वो होगा तब जब हमारे अंदर जो हो रहे छोटे-मोटे सूक्ष्म पाप हैं उसको भस्म करें, परिवर्तन करें और बाबा जो चाहते हैं वो ज्वाला स्वरूप योग जीवन में हो। एक घण्टे बैठेंगे उसके लिए नहीं, बल्कि जीवन में श्रीमत की कसौटी पर चलना ही ज्वाला स्वरूप योग है।

शुद्ध वृत्ति ही हमारी श्रेष्ठ कृत्ति का आधार बनती है...

कोई हमारा बहुत सहयोगी है, वह मेरे सामने आयेगा तो मेरी उसके प्रति दृष्टि ऑटोमेटिकली प्यार की जायेगी और उसकी चाल-चलन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब अच्छा लगेगा।

कई ऐसे होते हैं जो कोई बड़ा प्रोग्राम करने के बाद थोड़ा थक जाते हैं। मन भी थक जाता है, तन भी थक जाता है तो धन भी खत्म हो जाता है। फिर सोचते हैं कि हमारी पॉवर कम हो गई, सेवा तो की लेकिन पॉवर कम हो गई। क्यों पॉवर कम हो गई? क्योंकि उस समय बुद्धि इतनी बिज़ी थी कि उसमें कर्म कॉन्शियस हो गई। उसमें बाबा की आज्ञाएं भी भूल जाते हैं। फिर सेवा में जब एक-दो में सम्पर्क-सम्बन्ध बढ़ता है तो जो 63जन्मों से बुराई देखने की आदत है, वह फिर इमर्ज हो जाती है। लेकिन बाबा ने कहा है वह देखो ही नहीं। सी नो इविल, टॉक नो इविल... यह स्लोगन याद रखो। हमारी वृत्ति में कभी अशुभ भावना, अशुभ कामना आवे ही नहीं। तो देखो आपकी अवस्था बहुत अच्छी रहेगी।

जैसे चन्द्रमणि दादी, उनकी विशेषता क्या रही? वह न्यारी रहती थी, कितना भी कोई किसी की ग्लानि करके जावे तो भी दादी उसे उसी दृष्टि से नहीं देखेगी। तो देखो कितना सबके दिलों में छाप लगा दी। तो हम सबको भी शरीर तो एक ना एक दिन छोड़ना ही है। हम जायेंगे तो हमारी क्या महिमा करेंगे? ऐसे तैयार हैं? सब कहें वाह! फलानी तो बहुत अच्छी थी, मेरे प्रति तो सदैव प्यार रखा या एक कहेगी बहुत अच्छी और दूसरी कहेगी नहीं मेरे से तो अच्छी नहीं थी। यह सर्टिफिकेट नहीं मिले ना। इसीलिए अपनी वृत्ति को चेक करो। अगर वृत्ति हमारी ठीक है तो बाप समान बनना बहुत सहज है। शिवबाबा के लिए हमेशा महिमा में कहा जाता है- न्यारा और प्यारा। सिर्फ प्यारा नहीं है न्यारा भी इतना है, प्यारा भी इतना है, इसीलिए शिवबाबा सबको प्यारा लगता है। अगर किसको प्यार ज़्यादा करे, किसके प्रति शुभ भावना रखे, किसके प्रति नहीं रखे तो सभी प्यार नहीं करेंगे। लेकिन बाबा विश्व का प्यारा है। क्योंकि न्यारा भी इतना है तो प्यारा भी इतना है। तो हम लोगों का भी इस पर विशेष अटेन्शन हो। किसी के प्रति भी अपनी सब्कॉन्शियस में भी थोड़ा कुछ भरा हुआ न हो।

सेवा तो हमें करनी ही है, सबके सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है। किनारा नहीं करना है, किनारा हम कर नहीं सकते हैं। ब्रह्मा बाबा को देखो व्यक्त से अव्यक्त बने फिर भी किनारा किया? वतन से भी बाबा हम बच्चों को देखता रहता है, अनुभव कराता रहता है। किनारा किया क्या? तो हम कैसे किनारा कर सकते हैं! तो यही एक प्वाइंट बुद्धि में रखते हुए अपनी वृत्ति को शुद्ध कर लो। अगर वृत्ति हमारी शुभ हो गई तो दृष्टि, सृष्टि, कृति यानी प्रैक्टिकल लाइफ - यह सब ठीक हो जायेंगे। एक-एक को अलग नहीं करो। आज दृष्टि को ठीक करूं, फिर वृत्ति को ठीक करूं, फिर सृष्टि को ठीक करूं... ऐसे एक-एक में इतना समय लगायेंगे तो संगम इसी में बीत जायेगा। इसीलिए एक फाउण्डेशन है वृत्ति। वृत्ति जैसी भी होगी वैसी हमारी दृष्टि होगी। कोई हमारा बहुत सहयोगी है, वह मेरे सामने आयेगा तो मेरी उसके प्रति दृष्टि ऑटोमेटिकली प्यार की जायेगी और उसकी चाल-चलन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब अच्छा लगेगा। तो वृत्ति के ऊपर बाबा हम सबका विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं। वृत्ति से हम सेवा भी कर सकते हैं, वायुमण्डल बना सकते हैं और अपनी अवस्था भी अच्छी रख सकते हैं। इसमें डबल फायदा है। सेवा की सेवा और साथ-साथ स्व परिवर्तन। तो वृत्ति को शुभ, श्रेष्ठ बनाओ।

महसूसता की शक्ति से अन्दर के कीड़े को समाप्त करें

महाभारत के युद्ध का समय है, यानी सारे विश्व में लड़ाई है। कोई स्थान नहीं है जहाँ इन्सान बचने का स्थान बना सके। पर ठिकाना अगर बनाना है तो बुद्धि को ठिकाने पर लगाओ। राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी। यह करना है, यह नहीं करना है क्योंकि बुद्धि का कनेक्शन कल्याणकारी बाप के साथ है। श्रीमत में मनमत मिक्स करने की आदत नहीं है। मनुष्य मत श्रीमत को समझने नहीं देती है, बीच में टीं-टीं करता है। अरे तू सुन तो सही ना - वर्तमान समय भगवान क्या कहता है! सुनने और ग्रहण करने की शक्ति है बुद्धि में। मन शान्त रहे तो बुद्धि स्वीकार करती है। संस्कार बीच में आते हैं पर उसको बुद्धि चुप करा देती है। संस्कारों में देह अभिमान भरा पड़ा है तो बुद्धि यह रियलाइज़ कराती है।

मेरी बुद्धि में मम्मा, बाबा और दीदी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। मेरे बड़ों ने जो सिखाया है, उनके जैसा उदाहरण बनना है। जो शिक्षा मिली है उसी अनुसार चलना है। इतना बुद्धि को अच्छी तरह ठिकाने लगाना, यह अपने लिए पुण्य कर्म करना है, इसमें कमाई है बहुत। एक कदम भी हमारा कमाई बिगर न जाये। पदमापदमपति का टाइटल हमारा है। हमारे पास अथाह धन है, पहले गुणों का धन है, ज्ञान का धन है, यह धन कहाँ से आया? समय ने दिया, भगवान ने दिया। समय नहीं गँवाया, हर कदम में पदमों की कमाई जमा की है। कमाई कैसे करो, यह बाप ने सिखाया है। शिवबाबा कहता है ब्रह्मा बाबा के द्वारा इसके कर्म देख फॉलो करो।

स्थिति को अच्छा बनाके रखना- यह हमारी शान है। बिगर पूछे झुटके आवें! अपने को सीधा बैठना सिखाओ। बार-बार अन्दर प्रैक्टिस करो क्योंकि आत्मा देह-अभिमान में इतनी फंस गई है, जैसे कीड़ा बन गयी है। कीड़े के संग से इंफेक्शन हो जाता है। कीड़ों की वृद्धि जल्दी होती है, ब्राह्मणों की वृद्धि देर से होती है। ब्राह्मणी वो जो भ्रमरी हो उड़ती भी है और कीड़े को उठा के उसको अपने संग का रंग देकर चेंज कर देती है। अपने से पूछना है मेरी डयूटी क्या है। हर संकल्प में, कर्म में, भूँ-भूँ मुख से कहेंगे तो असर नहीं होगा। संकल्प और कर्म का असर होगा। संकल्प शुद्ध और कल्याण वाला हो, अच्छा हो तो वह संकल्प काम करता है। ऑटोमेटिक वो बदलता है, चेहरा चेंज होता जाता है।

सबसे अच्छा अपना मित्र बनना हो तो रियलाइज़ेशन के महत्व को जानो। एक बार मम्मा से पूछा मैं क्या पुरूषार्थ करूं। तो मम्मा ने कहा महसूसता की शक्ति सदा अच्छी रखना। आपेही मम्मा-बाबा को बताये मेरी यह भूल हुई। मैं भी आप लोगों से पूछती रहती हूँ कि मेरी कोई भूल हो तो मुझे बताओ। मैं सुधारने चाहती हूँ अपने आपको। कभी भी यह नहीं आयेगा कि औरों की गलती है। दूसरों की गलती देखना, अपनी गलती न देखना। कोई रियलाइज़ कराये तो हर्ट हो जाना,(दर्द पड़ना) फिर हर्ट को हील करना - वह क्या पुरूषार्थ करेगा। देह अभिमान वाले को कोई भी इशारा मिलेगा तो दर्द हो जायेगा। अरे, सुनते ही शक्ल चेंज क्यों होती, थैंक्स मानो जो इशारा दिया। इसमें फिर बाबा का प्यार चाहिए। हाथ छोड़ के जाने वाला नहीं चाहिए।

तो एक महसूसता की शक्ति ऐसी हो जो पता चले कि मेरे में अन्दर अब तक कौन-सा कीड़ा बैठा है। काम का कीड़ा महान दुश्मन है। दृष्टि-वृत्ति कभी भी रूहानियत और ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न नहीं बनेंगी। अगर इसमें हम वंचित रह गये तो क्या भाग्य हुआ!

बाबा और बेहद की खुशी हमारा खज़ाना है

बाबा ने हम बच्चों को लक्ष्य दिया है कि बच्चे तुम्हें डबल लाइट बनना है। इस स्थिति में न कोई इच्छा रहेगी, न कोई फीलिंग रहेगी, न कोई उदासी रहेगी, न कोई किसी को देखेंगे। जैसे बाबा कहते आँखें खोल कर बैठो। आँखें खोलकर बैठते हैं, देखते बाबा को हैं। ऐसे सदा ही देखते भी कुछ न देखो।

एक तो हमको ड्रामा का ज्ञान है, बाबा ज़िम्मेदार है, बाबा अथॉरिटी है, सेवाएं बाबा की हैं, हम बाबा के हैं, ज्ञान दाता बाबा, वरदान देने वाला बाबा, जब हर बात में बाबा ही बिन्दु है तो हम क्या बिन्दु बनावें। हम सुखदाता की सन्तान सुखदाता हैं, सुख स्वरूप हैं। हमें मास्टर सर्वशक्तिवान बन विघ्न विनाशक बनना है। एक बात आप प्रैक्टिकल करो- सवेरे-सवेरे उठते तीन बातें याद करो, पहले बाबा, फिर मन्मनाभव, फिर अपने को प्रैक्टिकल में इस नशे में ले आओ हम हैं मास्टर सर्वशक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान माना ही योगबल द्वारा विघ्नों का विनाश करने वाले। दूसरा, हम हैं बाबा के डबल लाइट बच्चे। बाबा ने कहा लाइट हो गये, याद किया तो लाइट का ताज मिल गया। तो हम हैं डबल लाइट। तीसरा, सदैव सर्व को शुभ भावना-शुभ कामना का वायब्रेशन दो। फिर है मुझे सदा अपार खुशी में झूमते रहना है, कोई शक्ति नहीं जो मेरी खुशी को गायब करे, ये नशा चाहिए। मुझे बाबा मिला इससे बड़ी कोई खुशी नहीं है। खुशी गायब माना बाबा गायब। कोई कहता इसने मेरी खुशी गायब कर दी, माना उसने आपका बाबा गायब कर दिया। रावण ने राम को गाली दी तो क्या राम अपनी शक्ति को भूल गया! बोलने वाले ने बोल दिया, उसको थैंक्स दो। हमें माया को जीतना है या माया से हारना है? हमें सर्व इच्छाओं को पूर्ण करने वाला बाबा मिला, बाकी क्या इच्छा चाहिए! बाबा ने हमें बहुत नशा चढ़ा कर ऊंचा बनाकर रखा है। इसीलिए किसी प्रकार की न उदासी, न चिन्ता, न ममता। बाकी हम क्या हुए? हम हो गये नष्टोमोहा। बाबा और बेहद की खुशी हमारा खज़ाना है। इसी मस्ती में रहते हैं तो मस्त रहते हैं।

जैसे हमारे संकल्प... वैसी हमारी दुनिया...

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

स्मृति रूपी नांव में ही यह जीवन की यात्रा जब हम करेंगे तब इस कलियुगी ठौर से सतयुगी ठौर की ओर जायेंगे। दूसरा कोई तरीका नहीं

संकल्प कितनी महान शक्ति है, जिससे सृष्टि को बदला जाता है। संकल्प कोई साधारण चीज़ नहीं है। ऐसे नहीं मेरा संकल्प उठा उसको दबा दिया, संकल्प चला उसको मुख में लाकर वर्णन कर दिया। संकल्प चला हमने कर्म में लाकर कोई नुकसान कर दिया, किसी को दुःख दे दिया। तो यह संकल्प से जो हम कार्य करते रहते हैं यह हमारे साधारण, लौकिक, विकार युक्त संकल्प हैं। दिन भर में कितने संकल्प हम करते हैं, उठते-बैठते संकल्प से ही तो हैं। हमारी सारी हलचल संकल्प से ही होती है।

कल्प और संकल्प सम्बन्धित है। यह कल्प क्या है, कल्प को कल्प क्यों कहते हैं? हमारे जो पाँच हज़ार वर्ष तक अलग-अलग संकल्प चलते रहते हैं, उसके बाद फिर रिपीट होने लगते हैं। तो जब तक भिन्न-भिन्न संकल्प चलते हैं, उस समय की अवधि पाँच हज़ार वर्ष है। तो संकल्प से हमारा कल्प, हमारा भाग्य बनता है। हम महानता की ओर जाते हैं या पतन की ओर जाते हैं। तो क्या आप इसको इतना महत्व देते हैं या उसको ऐसे ही खर्च कर देते हैं? तो हम लोगों के पास जो संकल्प रूपी अनमोल धन है, उससे हम कहाँ पहुंच सकते हैं- यह सोचने की बात है। कितनी महान हमारी स्थिति हो सकती है। लेकिन हम जो संकल्प रूपी धन को गंवाते हैं तो संकल्प के महत्व को नहीं जानते, हमारी वृत्तियां बदलती रहती हैं- कभी अशुद्ध, कभी शुद्ध, कभी देहअभिमान जनित, कभी आत्म अभिमान जनित, कभी योगयुक्त और कभी योगभ्रष्ट... तो कोई व्यक्ति अगर पाँच कदम आगे बढ़े और दस कदम वापिस लौट आये तो उसने प्रगति की या अवनति की? ऐसे ही अगर हमने ट्रैफिक कंट्रोल के समय कुछ अच्छे संकल्प लिये, हमारी वृत्ति अच्छी रही और बाकी समय में अगर हमारी वृत्ति खराब रही, जितना फासला हमने योग के द्वारा तय किया, उसके बाद दिनभर में हम लोगों के अवगुण नोट करते रहे, उनसे हमारा व्यवहार श्रेष्ठ नहीं रहा, हमारी वृत्ति सर्वोत्तम, सतोप्रधान देवी-देवताओं जैसी निर्मल, सन्तुष्ट, हर्षित चित्त होनी चाहिए,वह वृत्ति कैसे होगी? अगर हमारी वृत्ति, दृष्टि कभी कुछ है, कभी कुछ है, अभी-अभी उमंग-उत्साह है, शूरवीर योगी हैं और किसी ने कुछ कह दिया, नाजुक इतने हैं कि दिल की कली मुरझा गई।

योग भोग सब एक तरफ रखके बैठ गये, खाना भी स्वीकार नहीं और हम अश्रुधारा बहाने लगे तो क्या हमने किया? हमारी क्या स्थिति रही? अप एंड डाउन। तो प्रगति कैसे होगी? और प्रगति नहीं होगी तो मन सन्तुष्ट कैसे होगा! सन्तुष्ट नहीं होगा तो हर्षित कैसे होगा! और अगर संतुष्ट भी नहीं, हर्षित भी नहीं तो ज़रूर किसी से नाराज़ होगा तो उसमें वह प्रेम भी कैसे होगा। और अगर यह सब नहीं होगा तो उसकी सतोप्रधान वृत्ति कैसे होगी! फिर हम मनुष्य से देवता बनेंगे कैसे? तो हमें अपने संकल्पों का, अपनी वृत्ति को ठीक रखने का महत्व नहीं मालूम। लेकिन विशेष रूप से योगी का कोई शत्रु नहीं, यह बात बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि योग का अर्थ है याद और याद दो की आती है या तो जिसे आपकी घनिष्ठ मित्रता है, जिसके आप बहुत नज़दीक हों, जिससे आपका मन जुड़ा हुआ हो, आप एक-दूसरे को पसंद करते हों, उनकी बातें अच्छी लगती हों, उनकी जीवन पद्धति ठीक लगती हो या जो शत्रु हैं उनकी याद आती है। कहेंगे इसने तो हमें बहुत तंग कर रखा है। जबसे यह हमारे जीवन में प्रवेश हुआ है हम परेशान हैं। यह तो हमें चैन लेने ही नहीं देता है। उससे ही हमारा मनमुटाव होता है, नाराज़गी होती है, हमारी अवस्था डाउन होती है। ईर्ष्या-द्वेष उससे ही होता है। आप उसे शत्रु शब्द से सम्बोधित न करते हों, लेकिन उसके प्रति वृत्ति ऐसे ही होती है। उससे ओम शांति भी करेंगे तो वह ओम शांति दूसरे प्रकार की होती है।

कई तो शिकायत से डरकर ओम शान्ति करते हैं क्योंकि सोचते हैं कि यह बात बड़ों तक न पहुंच जाए कि इनकी आपस में बोल-चाल नहीं है, यह प्यार से ओम शान्ति भी नहीं करते। तो वह खतरा हो जायेगा, उस खतरे से बचने के लिए ओम शान्ति कह देते। तो जिसको वृत्ति में, संकल्प में या स्मृति में भी हमने शत्रु मान लिया तो हमारी लुटिया डूब गई। हम तैर नहीं सकते, इस संसार सागर, भवसागर के पास नहीं हो सकते हैं क्योंकि हमें यहाँ से तैरकर ले जाने वाली स्मृति है। स्मृति रूपी नांव में ही यह जीवन की यात्रा जब हम करेंगे तब इस कलियुगी ठौर से सतयुगी ठौर की ओर जायेंगे। दूसरा कोई तरीका नहीं क्योंकि कहा गया है "आप जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे"। बनने का और कोई तरीका नहीं है।

- क्रमशः

रायपुर-छ.ग.। राज्यपाल रमेन डेका को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ रायपुर की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी।

गांधीनगर-गुज.। मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित रक्षाबंधन समारोह में माननीय मुख्यमंत्री भुपेन्द्र भाई पटेल को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के उपरान्त समूह चित्र में उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज़ सेक्टर 28 सेवाकेंद्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी। इस मौके पर चिलोडा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. तारा बहन, उर्जानगर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रंजन बहन, ब्र.कु. जुगनू बहन, ब्र.कु. कृपल बहन, ब्र.कु. मीरा बहन तथा ब्र.कु. आरती बहन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

मुम्बई-नेपेंसी रोड(महा.)। माननीय उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. रूक्मणि दीदी। साथ हैं ब्र.कु. निहा बहन, ब्र.कु. वंदना बहन और ब्र.कु. माला बहन।

मुम्बई-महा.। मालदीव के पर्यटन मंत्री इब्राहिम फैसल से मुम्बई के सेंट रेजिस होटल में ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से मुलाकात कर डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराया तथा संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के साथ ही राजयोग मेडिटेशन की किताब भेंट की।

सिकंदराबाद-वेस्ट मरेडपल्ली। तेलंगाना के माननीय मुख्यमंत्री अनुमुला रेवंत रेड्डी को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू दीदी,सेवाकेंद्र संचालिका,सिकंदराबाद उपक्षेत्र।

बीदर-कर्नाटक। सिद्धारूढ़ मठ संस्थान के मठाधिपति शिव कुमार स्वामी को रक्षासूत्र बांधने एवं ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं से अवगत कराकर मुख्यालय माउण्ट आबू के ग्लोबल सम्मिट का निमंत्रण देने के पश्चात उनके साथ उपस्थित हैं स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी, ब्र.कु. सपना बहन, ब्र.कु. काशीनाथ कोंडा तथा ब्र.कु. बाबूराव चुडे।

दुर्ग-छ.ग.। स्पेशल टास्क फोर्स के एस.एस.पी. विजय पांडे को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रीता बहन।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्व भवन सेवाकेंद्र में आयोजित कार्यक्रम में शहर एवं गांव के लगभग 1000 से भी अधिक भाई-बहनों को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा गया। इसके साथ ही सेंट्रल जेल के 500 से अधिक कैदी भाइयों, पुलिस लाइन में पुलिस जवानों तथा शहर के विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा राखी बांधी गई। कार्यक्रम में अम्बिकापुर सरगुजा संभाग की संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, शिव कुमार साहू,प्रधान आरक्षक, ग्राम पंचायत भगवानपुर खुर्द के सरपंच लाल बहादुर, बालेश्वर कुशवाहा, ब्र.कु. ममता बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित शहर के लगभग 150 से भी अधिक लोग उपस्थित रहे।

सीतामऊ-म.प्र.। एसडीएम शिवानी गर्ग को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात प्रसाद देते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन। साथ हैं ब्र.कु. प्रीति बहन व ब्र.कु. गौरव भाई।

नई दिल्ली। किंजरापु राममोहन नायडू,केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री,भारत सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनैना बहन। साथ हैं ब्र.कु. निकिता बहन।

कबीरधाम-छ.ग.। आवास एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलेश्वरी बहन।

खरगोन-म.प्र.। नव निर्वाचित सांसद गजेन्द्र पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण दीदी।

राजनांदगाँव-छ.ग.। जिलाधीश संजय अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन।

नीमच-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के पावन धाम सेवाकेंद्र पर रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चोपड़ा को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी।

नई दिल्ली। केंद्रीय कैबिनेट मंत्री,रेल सूचना एवं प्रसारण,इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी के अश्विनी वैष्णव को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सुनैना बहन।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। माननीय मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शांता बहन।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर उपमुख्यमंत्री शुक्ल राजेन्द्र को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।

सूरत-गुज.। सांसद मुकेश भाई दलाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ अडाजन सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दक्षा बहन।

सेंधवा-म.प्र.। भारत सरकार के राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. छाया बहन।

नीमच-म.प्र.। जिला कलेक्टर हिमांशु चन्द्रा को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

नई दिल्ली। कैबिनेट वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री,भारत सरकार पीयूष गोयल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निकिता बहन।

औरंगाबाद-महा.। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े को उनके जन्मदिन पर बधाई देने के पश्चात् रक्षासूत्र बांधते हुए सदाशिवनगर एन2 सेवाकेंद्र छत्रपति संभाजीनगर,महा. की संचालिका ब्र.कु. शोभा दीदी।

वर्धा-महा.। विधायक डॉ. पंकज भोयर को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी बहन।

सूरत-बालाजी रोड(गुज.)। एसएमसी कमिश्नर शालिनी अग्रवाल,आईएएस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. फाल्गुनी बहन।

इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय,इंदौर के कुलपति उपिंदर धर एवं विश्वविद्यालय की डीन डॉक्टोरल स्टडीज़ एंड रिसर्च श्रीमती संतोष धर को राखी बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शशि दीदी।

रायपुर-छ.ग.। माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ रायपुर की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी।

रायपुर-छ.ग.। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ रायपुर की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी।

मुम्बई-घाटकोपर। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर महाराष्ट्र राज्य विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर सहित अन्य गणमान्य लोगों को ब्रह्माकुमारीज़ योग भवन सेवाकेंद्र से ब्र.कु. सुनीला बहन, ब्र.कु. आरती बहन, ब्र.कु. चेतना बहन एवं ब्र.कु. शिरीषा बहन ने पवित्र रक्षासूत्र बांधा।

नखत्राणा-कच्छ(गुज.)। विधायक प्रध्युमन सिंह जाडेजा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण बहन।

भिंड-म.प्र.। पुलिस अधीक्षक डॉ. असित यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीरा दीदी।

मनुष्य अपनी करनी से ही श्रेष्ठ बन सकता

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कई कहते हैं कि हमारे पास टाइम नहीं है। अगर हमें परमात्मा को याद करना है तब हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के आवश्यक कार्यों में से कुछ कटौती कर परमात्मा के लिए समय निकालना होगा। तब पुण्य जमा हो सकता है।

कई हमसे पूछते हैं कि आप लोग ज्ञान की बातें करते हैं, परमात्मा में विश्वास भी रखते हैं लेकिन कभी मंदिर में पूजा-पाठ या व्रत-उपवास करते हुए नहीं देखा।

लेकिन ऐसा नहीं है कि हम मंदिरों में नहीं जाते। हम ज़रूर जाते हैं। देवी-देवताओं को हम अपने जीवन का आदर्श मानते हैं। वैसे भी ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय का ये लक्ष्य है कि जो भी भाई-बहनें आते हैं उनके लिए कि नर ऐसी करनी करे जो श्रीनारायण बने, और नारी ऐसी करनी करे जो श्रीलक्ष्मी बने। अर्थात् मनुष्य अपनी करनी से ही श्रेष्ठ बन सकता है। तो गृहस्थ जीवन में रहते हुए कैसे गृहस्थ जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं ये प्रेरणा लेने जाते हैं। आज जब भक्ति के अन्दर पूजा-पाठ आदि जो भी करते हैं ये सब एक आधार हैं क्योंकि भगवान में मनुष्य का मन नहीं लगता है इसीलिए वो सोचता है कि कोई न कोई आधार अपना लें ताकि मन लगे, किसी भी माध्यम से मन लगे।

बहुत सुन्दर पौराणिक कथा याद आती है मुझे इसके ऊपर कि एक बार एक बनिया था और वो दोपहर को दुकान बंद करके अपने घर जा रहा था तो स्वाभाविक रीति से उसने देखा कि बाहर एक महात्मा जी भिक्षा के लिए खड़े थे। उसने महात्मा जी से कहा कि महात्मा जी भोजन का समय है आप आ जाइए। साथ में मिलकर भोजन करते हैं। भोजन के बाद महात्मा जी ने स्वाभाविक रीति से बनिये से पूछा कि सारे दिन में भगवान को कितना याद करते हो? बनिये ने कहा टाइम कहाँ मिलता है? सारा दिन तो दुकान पर बिज़ी रहते हैं। फिर समय ही कहाँ भगवान को याद करने का? महात्मा जी मुस्कुराये और कहा कि अच्छा समय नहीं मिलता है, बनिया बोला कि हाँ बहुत व्यस्त रहता हूँ समय ही नहीं मिलता है। तो महात्मा जी ने पूछा कि एक बात बताइए कि तुम भोजन कितनी बार करते हो। बनिये ने कहा कि तीन टाइम, सुबह नाश्ता, दोपहर को और रात को। तो कहा कि एक टाइम भोजन करने में कितना समय लग जाता है। तो कहा कि आधा घंटा तो कम से कम जाता ही है। तो महात्मा जी ने विधि बताई ऐसा करें कि एक दिन अगर एक टाइम भोजन न करें चल सकता है? आधा घंटा बच जायेगा। और उस आधे घंटे में तुम ईश्वर को याद करो। कलियुग के अन्दर अगर हफ्ते में एक दिन भी आधा घंटा ईश्वर को याद किया तो पुण्य तो जमा होगा। तो बनिये ने सोचकर कहा इतना तो ज़रूर मैं कर सकता हूँ कि एक दिन एक टाइम भोजन नहीं करूंगा, आधा घंटा ईश्वर को याद करूंगा। महात्मा जी ने कहा कि अगर हो सकता है दो टाइम भोजन के बिना चल सकता है तो एक घंटा मिल जायेगा। एक घंटा तुमने याद किया भगवान को इस कलियुग के अन्दर तो भी बहुत पुण्य मिल जायेगा। तो बनिये ने कहा ये भी मैं कर सकता हूँ कि एक दिन अगर दो टाइम भोजन छोड़ कर रात को ही सीधा भोजन कर लूं ये तो चल सकता है। और फिर महात्मा जी ने कहा कि ऐसा अगर हफ्ते में दो बार कर सकते हो तो और भी अच्छा होगा। तो कहा ये भी हो सकता है। और वहाँ से उपवास शुरू हुए।

उपवास का मतलब ही ये है कि उपवास ये शब्द को अगर अलग करें उप+वास अर्थात् उप के दो अर्थ होते हैं उप माना ऊपर, उप माना नज़दीक। ऊपर निवास करने वाले परमात्मा के नज़दीक हमारी बुद्धि का वास रहे ये है उपवास। और वहाँ से उपवास शुरू हुए हैं। कहने का भावार्थ चाहे पूजा-पाठ, व्रत-उपवास ये सबके पीछे भाव यही है कि हम मन को परमात्मा में एकाग्र करें और परमात्मा को याद करें।

अहमदनगर-महा.। प्रसिद्ध समाज सेवक पद्मभूषण श्री अन्ना हजारे को रालेगण-सिद्धि गांव में उनके निवास पर राखी बांधते हुए ब्र.कु. बहनें। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में केन्द्रीय कारागार में आयोजित आध्यात्मिक समारोह में सभी को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाकर ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की रायपुर संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. रुचिका बहन, ब्र.कु. रश्मि बहन, ब्र.कु. स्नेहमयी बहन व ब्र.कु. भावना बहन आदि मौजूद रहे।

ग्वालियर-म.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर "नवभारत" प्रेस के स्थानीय संपादक हरीश दुबे व कार्यालय के सभी पत्रकार भाइयों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रहलाद। साथ हैं ब्र.कु. रोशनी तथा ब्र.कु. सुरभि।

सेल्फ हेल्प

कार्य सरल होना ठीक है, लेकिन कार्य शुभ हो, कल्याणकारी हो, वो ज़्यादा उत्तम है। हम सभी ज़्यादातर सहजता की तरफ अपने आप को ले जाते हैं और सरल मार्ग अपनाते हैं किसी भी कार्य की सफलता के लिए। चाहे उसमें हमारे मूल्य हों न हों, बस हमको अपना कार्य करना है, ये भावना सबकी है। लेकिन

कार्य कल्याणकारी होना ज़्यादा उत्तम

उस कार्य से आपको संतुष्टि नहीं होती होगी। अगर वहीं पर जो कार्य कल्याणकारी भाव से, शुभ भाव से, विश्व कल्याण के भाव से किया जाता है उसमें उसके भाव भी अलग होते हैं, उसकी प्राप्ति भी श्रेष्ठ होती है और वो मन को सुकून देता है। तो कार्य शुभ भी हो और सरल भी हो तो सफलता लम्बे काल की होती है।

खेड़ा-गुज। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से एच.एन.डी. पारेख हाई स्कूल में आयोजित रक्षाबंधन के कार्यक्रम में ब्र.कु. दक्षा बहन ने सभी शिक्षकों व स्टाफ को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का शुभ संकल्प कराया।

छतरपुर-म.प्र.। दैनिक भास्कर कार्यालय में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात समूह चित्र में ब्यूरो चीफ आशीष खरे, ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. रीना बहन व समस्त स्टाफ।

गांधीधाम-भारत नगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गलपादरा स्थित आर्मी कैम्प में रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सभी अधिकारियों एवं जवानों को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा गया। इस मौके पर कुलवंत सिंह,सूबेदार मेजर,इंडियन आर्मी गलपादरा कैम्प, ब्र.कु. सरिता बहन,स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका, ब्र.कु. हैप्पी भाई, ब्र.कु. विजय भाई व ब्र.कु. रिंकू बहन आदि उपस्थित रहे।

इस चीज़ के पानी को खाली पेट पीने से मिलते हैं गज़ब के फायदे

भारतीय घरों में धनिया को अलग-अलग तरह से इस्तेमाल किया जाता है। कहीं धनिया के पत्तों की चटनी बनती है, कहीं इसे खुरदरा पीसकर अचार में डाला जाता है तो कहीं पर धनिया के दाने पीसकर मसाला बनाया जाता है। जो लगभग हर सब्जी में डलता है। धनिया के दानों की बात करें तो ये स्वाद में ही अलग नहीं होते बल्कि सेहत को भी इनसे अनेक फायदे मिलते हैं। अब यहाँ जानेंगे धनिया के दानों का पानी बनाने का तरीका और इस पानी को पीने के फायदों के बारे में...

इम्युनिटी होती मजबूत

एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर धनिया के दाने आपको कई रोगों से बचाते हैं। इन दानों का पानी पीने से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। जिससे आप कई तरह के संक्रमण से बच सकते हैं।

वजन घटाने के लिए

रोज़ सुबह खाली पेट धनिया का पानी पीने पर वजन कम करने में मदद मिल सकती है। इस पानी को पीने पर पाचन में मदद मिलती है और मेटाबॉलिज़्म बेहतर होता है। साथ ही धनिया का पानी डिटॉक्स वॉटर की तरह असर दिखाता है। इसीलिए मोटापा कम करने के लिए रोज़ सुबह धनिया का पानी पी सकते हैं।

आँखों के लिए फायदेमंद

धनिया में विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन ई जैसे तमाम पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो आँखों की रोशनी को बेहतर बनाते हैं। आँखों के स्वास्थ्य के लिए रोज़ाना धनिया का पानी पी सकते हैं।

बालों को बनाता मजबूत

धनिया कई पोषक तत्वों से भरपूर है। इसमें विटामिन सी, विटामिन के और अन्य तत्व पाए जाते हैं, जो बालों को मजबूती प्रदान करते हैं। सुबह धनिये का पानी पीने से बालों का झड़ना और टूटना कम हो सकता है। इसके अलावा, आप धनिये का तेल या हेयर मास्क का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

यूरिक एसिड करे कम

यूरिक एसिड कम करने के लिए भी धनिया का पानी पिया जा सकता है। इस पानी को पीने पर शरीर से टॉक्सिन और यूरिक एसिड फ्लश होकर बाहर निकल जाते हैं। सब्जी या रायता बनाने में आप धनिया के पत्तों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

गर्मियों के लिए फायदेमंद

गर्मियों के मौसम में शरीर को ताज़गी और ठंडक की ज़रूरत होती है, खासतौर से लू और गर्माहट से बचने के लिए, ऐसे में धनिया का पानी पीना फायदेमंद साबित होता है।

एसिडिटी के लिए फायदेमंद

धनिया पानी एसिडिटी या अम्लता को कम करने में बहुत फायदेमंद साबित होता है। धनिये में मौजूद गुण पेट की अम्लता को कम करने में मदद करते हैं। धनिया पानी पीने से पेट में एसिड का स्तर कम होता है और इससे एसिडिटी से होने वाली जलन और दर्द भी कम हो जाते हैं। धनिये के बीजों में एंटी इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं जो एसिडिटी के कारण होने वाली परेशनी को कम करते हैं। सुबह खाली पेट धनिया पानी पीने से पेट संबंधी तकलीफों में राहत मिल सकती है।

याद रखें, धनिये का ज़्यादा सेवन है हानिकारक

धनिये के बीज के अधिक सेवन से उल्टी, सिरदर्द, दस्त, सूजन, चक्कर आना और गैस जैसे विभिन्न दुष्प्रभाव हो सकते हैं। मधुमेह वाले लोगों को सुबह धनिये का पानी पीने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। क्योंकि यह उनके रक्त शर्करा के स्तर को कम कर सकता है और हाइपोग्लाइसीमिया का कारण बन सकता है।

कब्ज को करता ठीक

धनिया पानी कब्ज की समस्या को दूर करने में बहुत लाभदायक हो सकता है। धनिये में उच्च मात्रा में फाइबर पाया जाता है जो पाचन में सुधार करता है। यह आंतों की गति को बढ़ाता है जिससे कब्ज की समस्या दूर हो जाती है। धनिये के बीजों में मौजूद थाइमोल नामक यौगिक पाचन रसों के स्राव को बढ़ाता है जो कब्ज में राहत पहुंचाता है। साथ ही धनिये के पानी का सेवन करने से शरीर में पानी की मात्रा बढ़ती है जो कब्ज को दूर करने में सहायक होता है।

बॉडी को डिटॉक्स करे

लिवर को साफ रखने और बॉडी को डिटॉक्स करने के लिए धनिया का पानी पीना सबसे सही है। यदि आप किडनी की समस्या से पीड़ित हैं तो रोजाना धनिये का पानी पीना शुरू कर दें, क्योंकि इससे शरीर में मौजूद सभी प्रकार के विषाक्त पदार्थों और रोगाणुओं को बाहर निकालने में मदद मिलेगी।

भारीपन दूर करे और शरीर को ठंडा रखे

अगर ज़्यादा मसालेदार खाना खाने के बाद भारीपन महसूस कर रही हैं तो दिन में 2-3 बार धनिया पानी पिएं। यह न सिर्फ आपकी ब्लोटिंग को दूर करेगा, बल्कि आपको गर्मियों के दौरान ठंडा भी रखेगा।

खुशखबरी

आ गई शिव संदेश,राजयोग कॉमेन्ट्री की नयी कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक ज़ेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia.bkivv.org

मलेशिया। ज्ञानसरोवर माउण्ट आबू की ब्र.कु. सुमन बहन के 15 दिवसीय मलेशिया विज़िट के दौरान उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के एशिया रिट्रीट सेंटर के डायमंड हॉल में सभी ब्र.कु. भाई-बहनों को रक्षासूत्र बांधा। इसके साथ ही बंगसर सेंटर,क्लांग वैली, बुकिट मेरटाजम,नॉर्दर्न रीजन, ईपो,सेंट्रल रीजन, मेलका, पेनांग, जोहोर बाहरू,साउदर्न रीजन, बटरवर्द,नॉर्दर्न रीजन आदि स्थानों पर भी कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा ब्र.कु. सुमन बहन ने सभी को ईश्वरीय राखी बांधी।

गाडरवाड़ा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के लक्ष्मी टाउन शिप सेवाकेंद्र पर रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. उर्मिला दीदी ने रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए सभी को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा। इस मौके पर कथावाचक कृष्णकांत शर्मा, मनीष जायसवाल, रोटरी क्लब अध्यक्ष अशोक राजपूत, मनोज, अभिषेक बड़कुर, अरुण तिवारी, उत्सव गुप्ता व विवेक त्रिपाठी सहित अनेक भाई-बहनें उपस्थित रहे।

नई दिल्ली। सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्री,भारत सरकार नितिन गडकरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निकिता बहन। साथ हैं ब्र.कु. रजनी बहन, ब्र.कु. मदन भाई तथा ब्र.कु. रमेश भाई।

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,श्रम एवं रोजगार मंत्री जेपी नड्डा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निकिता बहन, ब्र.कु. सुनैना बहन, ब्र.कु. अशोक भाई तथा ब्र.कु. मदान भाई।

मुम्बई-घाटकोपर। माननीय मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अतिरिक्त निर्देशिका,ब्रह्माकुमारीज़ योग भवन।

हमें वो करना है जो हमारे और दूसरों के लिए सही है

प्रॉब्लम को छोड़ सॉल्यूशन की ओर चलें...

- गतांक से आगे...

आपने पिछले अंक में पढ़ा कि तो जो सब लोग कर रहे हैं वो सही हो गया। ये नहीं देखते कि जो सब लोग कर रहे हैं वो सभी लोगों का रिज़ल्ट क्या है, वो सब कर-कर के। जो सब लोग कर रहे हैं वो भी हम करेंगे, तो जो सबका रिज़ल्ट होगा वो ही फिर हमारा भी रिज़ल्ट होगा। अगर हम अच्छा कोई और रिज़ल्ट चाहते हैं तो हमें कुछ डिफ्रेंट करना पड़ेगा। और उसके लिए हमें डिफ्रेंट सोचना पड़ेगा।

जब भी कोई परिस्थिति आयेगी तो आपके पास दस लोग आयेंगे राय देने के लिए। और दस लोग जो राय देंगे उस टाइम वो एक बहुत ऑर्डनरी थॉट होगी। नहीं-नहीं ऐसा तो आपको करना ही चाहिए। उनको ऐसे ही थोड़े छोड़ दोगे आप। ऐसे ही उन्होंने इतनी बड़ी गलती कर दी उनको आप ऐसे ही छोड़ देंगे? आप उनको कुछ बोलोगे भी नहीं। ऐसे नहीं करना। आप कुछ नहीं बोलोगे तो वो चार बार और करेंगे। ये राय देने के लिए बहुत लोग हैं आस-पास। इसको हम कहेंगे ऑर्डनरी थिंकिंग। वास्तव में ये ऑर्डनरी नहीं ये निगेटिव थिंकिंग है। लेकिन हमारे पास कैपेसिटी है उस साधारण से ऊपर चढ़ने की? हाँ, उन्होंने किया लेकिन कोई बात नहीं। मुझे उस बात को इतना बड़ा नहीं बनाना है। ये वो ही कर सकेगा जो अपने और अपने परिवार के बारे में सोचता है। लेकिन जिसने ये ज़िम्मेवारी उठाई हुई है कि दुनिया के गलत को सुधारना मेरी ज़िम्मेदारी है। वो ज़्यादातर किसके बारे में सोचेगा, उनके बारे में सोचेगा।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

उनको सुधारने की सोचेगा। और फिर क्या होगा, न वो सुधरेंगे बिल्क हम भी बिगड़ जायेंगे। क्योंकि हम भी भर जाते हैं, किस चीज़ से? फिर गुस्सा, फिर चिंतन, फिर नफरत, फिर वो चलता जाता, चलता जाता। और सबसे डैमेजिंग चीज़ कि घर में फिर वो ही बातें होने लगती हैं सिर्फ। अपने पर रहम करें और अपने से प्यार करें। ऐसी बातें करना बंद करें। हम ये सोचते हैं कि जितना उसके बारे में बात करेंगे तो सॉल्यूशन निकलेगा। ज़हर का जितना भी मंथन करेंगे तो वो ज़हर ही निकलेगा। उसके बारे में करते जाते, करते जाते, बोलते जाते, बोलते जाते। जितना उसके बारे में बोलते जायेंगे वो ही वायब्रेशन पूरे घर में फैल जायेगा।

दूसरे को जिसके साथ हुआ है हम उसको कहते हैं भूल जाओ उस बात को। अभी वो भूले कैसे? उसको कोई भूलने देगा? भूलने देते हैं हम उसको। गलती से अगर दो मिनट चुप हो जाये तो हम फिर से वही टॉपिक स्टार्ट कर देंगे। अगर चाहिए कि कोई किसी चीज़ को भूल जाये जो पास्ट में हुआ है, तो अटेन्शन! वो बात, वो परिस्थिति और वो व्यक्ति हमारे घर में, हमारी वाणी में, हमारे चित्त पर अन्दर में कभी नहीं आना चाहिए।

वो वायब्रेशन मन से खत्म हो जाना चाहिए। तब तो वो खत्म कर सकेगा। अगर घर के सारे लोग उस बात के बारे में सोचना बंद करते हैं तो उसके साथ हुआ जो कुछ धीरे-धीरे वो भी भूल जायेगा। बोलना भी बंद करना है, साथ-साथ सोचना भी बंद करना है। अभी उस बात पर फुल स्टॉप लगाओ, उस टॉपिक पर बात नहीं करो। बहुत हो चुका। प्रॉब्लम को छोड़ सॉल्यूशन की तरफ चलें।

- क्रमशः

ब्यावरा-म.प्र.। नारायण सिंह पंवार,राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। साथ हैं ब्र.कु. तेजस्वी बहन।

मंदसौर-म.प्र.। विधायक विपिन जैन को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ऊषा बहन।

ग्वालियर-म.प्र.। राज्यसभा सांसद अशोक सिंह यादव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु. आदर्श दीदी व ब्र.कु. प्रहलाद भाई।

भुज-कच्छ आइयानगर(गुज.)। कलेक्टर अमित अरोड़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीना बहन। साथ हैं ब्र.कु. मंजू बहन।

नवसारी-जलालपोर(गुज.)। जलालपोर पुलिस स्टेशन के पीएसआई आर.एन.वसावा सहित समस्त स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के उपरांत समूह चित्र में ब्र.कु. भानु बहन।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

परमात्म ऊर्जा

आज सर्व पुरूषार्थी आत्माओं को देख-देख खुश हो रहे हैं क्योंकि जानते हैं कि यही श्रेष्ठ आत्मायें सृष्टि को परिवर्तन करने के निमित्त बनी हुई हैं। एक-एक श्रेष्ठ आत्मा नम्बरवार कितनी कमाल कर रही है। वर्तमान समय भले कोई भी कमी व कमज़ोरी है लेकिन भविष्य में यही आत्मायें क्या से क्या बनने वाली हैं और क्या से क्या बनाने वाली हैं! तो भविष्य को देख आप सभी की सम्पूर्ण स्टेज को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी से बड़े ते बड़े रूहानी जादूगर हो ना! जैसे जादूगर थोड़े ही समय में बहुत विचित्र खेल दिखाते हैं, वैसे आप रूहानी जादूगर भी अपनी रूहानियत की शक्ति से सारे विश्व को परिवर्तन में लाने वाले हो, कंगाल को डबल ताजधारी बनाने वाले हो। परन्तु इतना बड़ा कार्य स्वयं को बदलने अथवा विश्व को बदलने का, एक ही दृढ़ संकल्प से करने वाले हो। एक ही दृढ़ संकल्प से अपने को बदल देते हो। वह कौन-सा एक दृढ़ संकल्प, जिस एक संकल्प से अपने जन्मों की विस्मृति के संस्कार स्मृति में बदल जाएं? वह एक संकल्प कौन-सा? है भी एक सेकण्ड की बात जिससे स्वयं को बदल लिया। एक ही सेकण्ड का और एक ही संकल्प यह धारण किया कि मैं आत्मा हूँ। इस दृढ़ संकल्प से ही अपने सभी बातों को परिवर्तन में लाया। ऐसे ही, दृढ़ संकल्प से विश्व को भी परिवर्तन में लाते हो। वह एक दृढ़ संकल्प कौन-सा? हम ही विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हैं अर्थात् विश्व कल्याणकारी हैं। इस संकल्प को धारण करने से ही विश्व के परिवर्तन के कर्त्तव्य में सदा तत्पर रहते हो। तो एक ही संकल्प से अपने को व विश्व को बदल लेते हो, ऐसे रूहानी जादूगर हो। वह जादूगर तो अल्पकाल के चीज़ों को परिवर्तन में लाकर दिखाते हैं लेकिन आप रूहानी जादूगर अविनाशी परिवर्तन, अविनाशी प्राप्ति करने-कराने वाले हो। तो सदा अपने इस श्रेष्ठ मर्तबे और श्रेष्ठ कर्त्तव्य को सामने रखते हुए हर संकल्प व कर्म करो तो कोई भी संकल्प व कर्म व्यर्थ नहीं होगा। चलते-चलते पुराने शरीर और पुरानी दुनिया में रहते हुए अपने श्रेष्ठ मर्तबे को और श्रेष्ठ कर्त्तव्य को भूल जाने के कारण अनेक प्रकार की भूलें हो जाती हैं। अपने आपको भूलना -यह भी भूल है ना। जो अपने आपको भूलता है वह अनेक भूलों के निमित्त बन जाते हैं। इसलिए अपने मर्तबे को सदैव सामने रखो।

वर्ग पहेली का उत्तर-01

अव्यक्त मुरली 19-03-2000

ऊपर से नीचे: 1. सदा, 3. हार, 6. दया, 9. अपमान, 10. निर्मान, 11. संस्कार, 12. दिलतख्त, 14. जल, 15. नवम्बर, 17. कार, 18. मधुबन, 19. प्रथा, 20. माया।

बायें से दायें: 1. सरलता, 2. महापुण्य, 4. पुण्य, 5. दाग, 7. संकल्प, 8. कल्प, 13. समाज, 16. नल, 17. रथ, 21.थालियाँ, 22. महान।

नई दिल्ली। भारत के माननीय पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,ओआरसी निदेशिका। साथ हैं श्रीमती सविता कोविंद,पत्नी रामनाथ कोविंद।

नई दिल्ली। श्रम एवं रोजगार तथा युवा मामले एवं खेल कैबिनेट मंत्री,भारत सरकार मनसुख मंडाविया को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अनुसूया दीदी।

कवर्धा-छ.ग.। जन्मेजय महोबे,जिला कलेक्टर कबीरधाम को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलेश्वरी बहन।

मंदसौर-म.प्र.। राज्यसभा सांसद बंसीलाल गुर्जर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ऊषा बहन।

लखनादौन-सिवनी(म.प्र.)। विधायक दिनेश राय को राखी बांधने के पश्चात् प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. समता बहन।

देवरी-म.प्र.। रहली सिविल न्यायाधीश दिनेश देवड़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंदा बहन।

कथा सरिता

एक शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे। तभी एक छात्र ने उनसे सवाल पूछा यदि हम कुछ नया और कुछ अच्छा करना चाहें, परंतु समाज उसका विरोध करे तो हमें क्या करना चाहिए? शिक्षक ने थोड़ी देर कुछ सोचा और बोले बालक में इस प्रश्न का उत्तर कल दूंगा।

अगले दिन शिक्षक सभी छात्रों को नदी तट पर ले गए। उनके हाथ में तीन डंडियां थीं। उन्होंने छात्रों से कहा आज हम एक

बार-बार किया गया प्रयास सफलता की ओर ले ही जाता है

प्रयोग करेंगे और मछली पकड़ने वाली इन तीन डंडियों को देखो और सभी डंडियां एक ही लकड़ी से बनी हैं।

इसके बाद शिक्षक ने कल वाले छात्र को बुलाया जिसने उनसे सवाल पूछा था। शिक्षक ने छात्र से कहा ये लो इस लकड़ी की डंडी से मछली पकड़ो। तभी छात्र ने डंडी से बंधे कांटे में थोड़ा आटा लगाया और वह कांटा पानी में डाल दिया। कुछ देर बाद में ही एक बड़ी मछली कांटे में फंस गई और यह देख शिक्षक बोले बालक जल्दी से अपनी पूरी ताकत से मछली को बाहर की ओर खींचो।

छात्र ने, शिक्षक ने जैसा कहा वैसा ही किया पर मछली भी अपनी पूरी ताकत से भागने की कोशिश करने लगी जिससे वह डंडी दो टुकड़ों में टूट गई। यह देख शिक्षक छात्र से बोले कोई बात नहीं बालक तुम ये दूसरी डंडी लो और फिर से प्रयास करो। छात्र ने फिर दूसरे डंडी के कांटे पर थोड़ा आटा लगाकर कांटा पानी में डाला।

अब इस बार मछली वापस कांटे में फंसी तभी शिक्षक बोले आराम से और एकदम हल्के हाथ से कांटे को पानी से ऊपर खींचो। छात्र ने ऐसा ही किया पर मछली ने इतनी ज़ोर से झटका दिया कि वह डंडी ही छात्र के हाथ से छूट गई। तभी शिक्षक ने तीसरी डंडी छात्र के हाथ में थमाते हुए कहा एक बार फिर से तुम प्रयत्न करो। पर इस बार तुम ना अधिक ज़ोर लगाना और ना ही कम। जितनी शक्ति से कांटे में अटकी मछली खुद को पानी के अंदर की ओर खींचे तुम उतनी ही ताकत से लकड़ी की डंडी को भी बाहर की ओर खींचना और फिर देखना कुछ ही देर में मछली ताकत लगाने से खुद ही थक जाएगी और तब तुम आसानी से उसे बाहर निकाल सकते हो। छात्र ने वैसा ही किया और इस बार मछली पकड़ में आ गई।

छात्र गुरू का संकेत समझ गया कि हम जब भी कुछ अच्छा काम करते हैं तब यह समाज उसका तिरस्कार या नकारता ज़रूर है इसीलिए हमें उनको नकारते हुए अपने काम और लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए।

संत ने खोल कर रखे ब्रह्माकुमारीज़ के सारे राज़

तपस्या के लिए माउण्ट आबू उपयुक्त स्थान

यदि छोटे बच्चे के कोमल हृदय में श्रेष्ठ संस्कार के बीज बो दिये जायें और उसे परवरिश देकर, पालना कर पोषित करें तो वे दूसरों के आदर्श बन जाते हैं। इसीलिए परमात्मा ने छोटी बालिकाओं को अपने साथ ले वास्तविक संस्कारों से सिंचित कर परिवर्तन की आधारशिला के निमित्त बनाया।

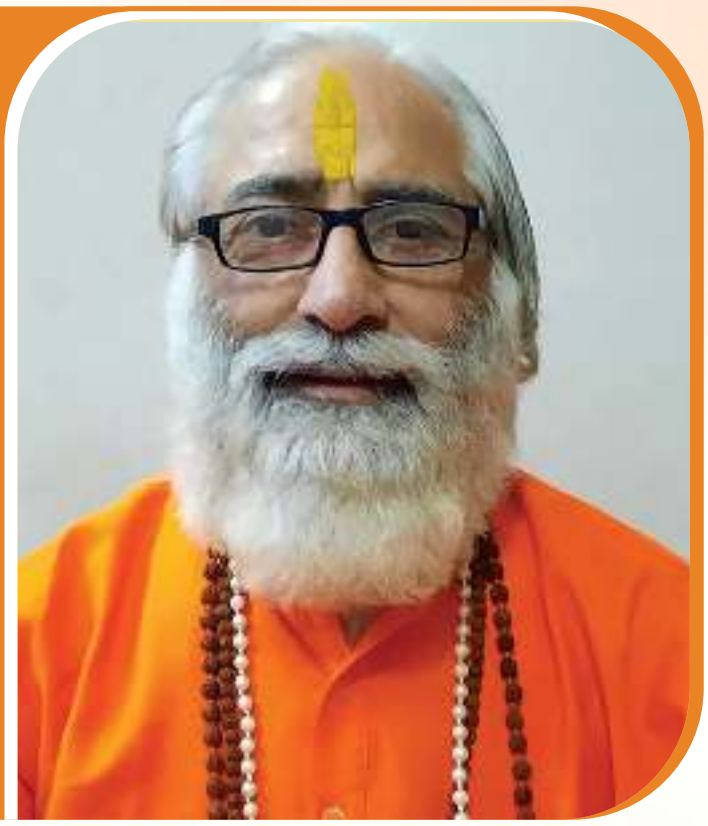

- गतांक से आगे...

रिपोर्टर : मेरा सवाल आपसे यह है कि महाराज जी दादा लेखराज कृपलानी ने माउण्ट आबू को क्यों चुना? और उन्होंने इस मिशन के लिए कुंवारी लड़कियों को अपने साथ क्यों लिया?

संतः दादा लेखराज कृपलानी को जब साक्षात्कार हो गया परमात्मा का तो सारा अंधकार मिट गया, अज्ञान समाप्त हो गया, भीतर से इनके घृणा समाप्त हो गई, प्रेम की लहरें बहने लगीं। इन्होंने माउण्ट आबू को इसलिए चुना क्योंकि माउण्ट आबू पहले भी एक तपोस्थली रही है। जितने भी आपने देखा होगा हमारे भारतवर्ष में माताओं के स्थल हैं। चाहे वो माता वैष्णो देवी का है, या नैना देवी का है, किसी भी देवी का स्थल हो या कोई भी तीर्थ स्थल हो वो अधिकतर आपको पहाड़ों पर ही मिलते हैं। और माउण्ट आबू में तो बहुत सारे तपस्वियों ने, ऋषियों ने तप किया हुआ है। जैनियों का सबसे बड़ा तीर्थ, सबसे बड़ा मन्दिर वहाँ पर है। वहाँ जाकर देखें आप। उसकी नक्काशी देखें। इन्होंने भी वहाँ जाकर तप किया। क्योंकि तपस्वियों की भूमि में तपस्वी ही तप कर सकता है। तो इन्होंने वहाँ जाकर तप किया। आचरण शुद्ध था ही। जो छोटी बालिकाएं साथ में इनके गई थी, उनके अंदर इन्होंने देखा कि वे एक शक्ति है, नारी शक्ति है। क्योंकि बेसिक शक्ति जो है वो है भगवती, मां दुर्गा की शक्ति। नारी शक्ति माँ दुर्गा का प्रतीक। हमारे यहाँ भी तो माना जाता है, पूजा की जाती है नारियों की। तो इन्होंने देखा कि नारी को ही अगर हम आगे बढ़ायें, नारी को ही आगे रखें तो वह दूसरों के भीतर एक माँ के रूप में, एक बहन के रूप में, स्वयं स-चरित्र बनकर दूसरों के भीतर उनके चरित्र का निर्माण कर सकती है। तो चरित्र निर्माण सबसे पहला कार्य इन्होंने करना शुरू किया। और कैसे किया जाए? तो उन्होंने एक विद्यालय की स्थापना की। उसको नाम दिया ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आध्यात्मिक विश्व विद्यालय। तो धीरे-धीरे, करते-करते इसलिए इन्होंने नारियों को अपने साथ लिया, नारी शक्ति को अपने साथ लिया और वह सारी दादियां बिल्कुल, आपने कुंवारी शब्द यूज़ किया है। हां वह कुंवारी हैं... कुमारी हैं वो।

रिपोर्टरः कुंवारी रहती हैं या उनकी शादी भी होती है?

संतः हां, शादी होती है, दो तरह की शादी होती है। एक होती शारीरिक जिसे बोलते लौकिक शादी होना। और एक होता है आध्यात्मिक तौर पर शादी हो जाना, किसी को अपना मान लेना। यहां ब्रह्माकुमारीज़ भी शादी करती हैं, मैं आपको बता दूं। लेकिन वे सिर्फ भगवान शिव के साथ करती हैं। आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए करती हैं। यूं ही नहीं शादी कर लेती कि आओ संतान पैदा करें। उसके लिए शादियां नहीं होती हैं। इसीलिए यह कहा गया कि हम ईश्वरीय संताने हैं, उस परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं। बच्चे हैं तो आपस में फिर भाई-बहन का रिश्ता इससे पवित्र रिश्ता तो मेरे ख्याल से कोई हो नहीं सकता।

अलीराजपुर-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर श्रीमती अनीता चौहान,सांसद झाबुआ,रतलाम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. माधुरी बहन। साथ हैं ब्र.कु. नारायण भाई।

नरसिंहपुर-म.प्र.। जिला कलेक्टर शीतला पटले को रक्षासूत्र बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना बहन।

भाटापारा-छ.ग.। विधायक इंद्रा साव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू बहन।

नौगांव-म.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर नगर निरीक्षक सुनील शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंचल बहन। साथ हैं ब्र.कु. अनु बहन।

पन्ना-म.प्र.। विधायक बृजेंद्र प्रताप सिंह,पूर्व मंत्री को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन।

हिरमी-छ.ग.। रक्षाबंधन के अवसर पर टंकराम वर्मा,विधायक बलौदा बाजार क्षेत्र को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरस्वती बहन और ब्र.कु. डिगेश्वरी बहन। साथ हैं प्रसिद्ध व्यवसायी रिपुसूदन वर्मा।

शुजालपुर-म.प्र.। शुजालपुर तहसील की एसडीएम श्रीमती अर्चना कुमार को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन एवं ब्र.कु. प्यारिमणि बहन।

हमारे जीवन के लिए आदर्श कौन हो सकता है

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

आप सभी जब भी किसी अच्छी बात की शुरूआत करते हैं तो हमेशा कहते हैं कि हमारा जीवन उनसे प्रेरित है। किसी महान आत्मा का नाम ले लेते हैं जिनसे आपका जीवन प्रेरणा लेता है। आप उसी के आधार से आगे भी बढ़ते हैं और आपको अच्छा भी लगता है। और ये सच बात भी है। निश्चित रूप से किसी न किसी को जीवन में हम प्रेरणा तो बनाते ही हैं। लेकिन कई बार जब हम जिसको प्रेरणा बनाये हुए होते हैं और जिसके आधार पर अपना कर्म शुरू किया होता है, लेकिन जब उनकी कोई भी ऐसी बात कुछ दिन बाद हम सुन लेते हैं, देख लेते हैं तो हमारे मन के भाव बदल जाते हैं कि मैंने तो इनको अपना आदर्श बनाया था। तो मेरे को लगता है कि मैंने कहीं शायद गलत तो नहीं चूज़ कर लिया! फिर हम विकल्प तलाश्ते हैं। फिर हम कुछ दिन बाद किसी और को, तो ऐसे करते-करते हमारा सारा जीवन एक उलझन में बीत रहा होता है कि किसको अपना आदर्श बनाया जाये। क्योंकि हर कोई जो भी इस दुनिया में एक-एक रोल में है वो एक दायरे में है, एक लिमिटेशन में है, और जो व्यक्ति दायरे में होता है, सीमाओं में बंधा होता है तो उसके फिर कर्म भी वैसे ही होंगे। तो जो भी हमको आदर्श रूप में दिखता है या दिखाया जाता है उसकी भी एक सीमा है। वो सीमा से परे नहीं हो सकता। वो हमेशा एक दायरे में ही हमको दिखाई देगा।

तो अब इसके लिए हम क्या ऐसा करें कि हमारे लिए एक आदर्श भी बन जाये और सीमा भी न हो। उसका दायरा भी बड़ा ऊंचा हो। उसके लिए सबसे पहले अध्यात्म को अपने जीवन में अपनाना पड़ेगा। वैसे तो हम सभी आध्यात्मिक ऑलरेडी हैं ही। हमारे अन्दर अध्यात्म है लेकिन उसके अन्दर पहचानने का मतलब ये है कि जो भी हम कर्म करते हैं, तो कर्म करने का आधार ये है कि क्या कर्म करते हुए हम उस कर्म के मालिक हैं या गुलाम हैं? जब हम किसी कर्म को करने के बाद भूल जाते हैं तो मालिक हैं और कर्म करने के बाद जब हमको सारी बातें याद रहती हैं तो हम उसके गुलाम हैं। जैसे किसी भी कर्म को करते हुए आपको ये कॉन्शियस होता है कि उन्होंने मेरे लिए, इस बात के लिए ऐसा कहा था। अगर किसी ने किसी बात के लिए आपको कमेंट कर दिया अच्छा या बुरा, तो उसके आधार से जो कर्म होता है वो कर्म भी बंधन बनाता है हमारे जीवन में। तो हमारे जीवन में बंधन का कारण क्या हो गया? जितनी भी लोगों ने प्रतिक्रियायें की चाहे अच्छी या बुरी उसके आधार से, उसी सोच के आधार से हमने अपने आप को बांधा है।

लेकिन अध्यात्म सिखाता है कि जब आप किसी भी चीज़ में बंधन महसूस करते हैं उसी समय से आप अपनी ऊर्जा को कम पायेंगे। एनर्जी को हमेशा लॉ पायेंगे। क्योंकि आप उस आधार से उसको खुश करने के लिए, उस लेवल पर जाने के लिए बहुत सारे वैसे तरीके भी अपना सकते हैं, लेकिन परमात्मा एकदम अलग सिखाते हैं। वो सिखाते हैं कि आप सभी जो भी कर्म करते हो, जो भी संस्कार बनाते हो वो संस्कार आप थोड़े दिन के लिए बनाते हो। फिर वो संस्कार भूल जाते हैं अगले जन्म में। तो फिर अगले जन्म में नया संस्कार बनता है। लेकिन जो हमारा ओरिज़नल संस्कार है। जो हमारा ओरिज़नल नेचर है वो बिल्कुल ही स्टेबल है, स्थायी है, क्लीन है, और वो जो ओरिज़नल नेचर है वो हमको कर्म के बंधन से मुक्त करता है। तो कर्म के बंधन से मुक्त कराने वाला, जो कार्य कराने वाला है उसको हम अपना आदर्श बनायें। क्योंकि हर कोई हमें कर्म में बांध रहा है। अपने-अपने दायरे के हिसाब से हमको बांधता जा रहा है। लेकिन जो हमको कर्म के बंधन से मुक्त कराता है, हमको ये सिखाता है कि सुकून तभी है जब उस बात को तुम भूल जाओ, जिसको तुमने किया है। तो वो चीज़ हमको हमेशा सुखदाई लगेगी। अब ये कार्य सिर्फ और सिर्फ परमात्मा ने किया। और परमात्मा ने जिसको अपना रथ चुना, अपना निमित्त चुना, अपना इंस्ट्रूमेंट चुना उसको भी परफेक्ट बनाया। और उस परफेक्शन को देखते हुए लगता है कि अगर आदर्श बनाना हो तो या तो प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को बनायें, या तो परमात्मा शिव को बनायें क्योंकि परमात्मा शिव निराकार है, ज्योतिबिन्दु स्वरूप है लेकिन साकार में परफेक्शन अगर किसी के अन्दर है जो कर्म से परे था, कर्मातीत था, कर्म करके भूल जाते थे तो वो प्रजापिता ब्रह्मा थे।

> *जो हमारा ओरिज़नल नेचर है वो बिल्कुल ही स्टेबल है, स्थायी है, क्लीन है, और वो जो ओरिज़नल नेचर है वो हमको कर्म के बंधन से मुक्त करता है। तो कर्म के बंधन से मुक्त कराने वाला, जो कार्य कराने वाला है उसको हम अपना आदर्श बनायें।*

इस तरह से हम अपने आपका पैरामीटर सेट करेंगे। जो कर्म बांधने वाला है, हर व्यक्ति जो हमारा आदर्श इस दुनिया में बनता है उसको फॉलो करने के बाद हम बंधते ही हैं, मुक्त नहीं होते। लेकिन परमात्मा ये है कि कर्म जो हमको मुक्त करे, हमको बांधे नहीं। नहीं तो बंधन से व्यक्ति के अन्दर बहुत सारे विकार पैदा हो जाते हैं। और वही हमें तंग करते हैं। तो आदर्श केवल और केवल परमात्मा या परमात्मा का निमित्त बनाया हुआ ये भागीरथ, भाग्यशाली रथ जिसे हम प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं। इसके आधार से ही सही रूप से हम इस जीवन में खुश रह सकते हैं। शांत रह सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। तो चलो आज हम इनको ही अपना आदर्श बनाकर अपने जीवन को इस पट्टे पर चलाके देखते हैं।

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मन की बातें

प्रश्न : मेरा नाम सरिता है और मैं लातुर से हूँ। मेरी सात महीने की बेटी है, उसकी प्रॉब्लम ये है कि वो जब कभी भी सोती है चाहे दिन हो या रात, नींद में घबराती है, रोती है। तो इसका कारण क्या हो सकता है, इसका समाधान क्या हो सकता है?

उत्तर : अब देखिए इस बच्ची ने इस जन्म में न ऐसा कुछ किया, न देखा। पूर्व जन्मों के इफेक्ट्स के ऊपर है। या तो इसकी मृत्यु बहुत घबराहट की स्थिति में हुई है। क्योंकि मृत्यु का इफेक्ट इतना गहरा सब्कॉन्शियस में आ जाता है कि उसका इफेक्ट लम्बे समय, अगले जीवन पर चलता रहता है। या फिर इसको किसी ने मारा हो बहुत ज़्यादा, किसी ने बहुत सताया हो, कष्ट देकर मार दिया हो तो इसके अर्न्तमन में भय समा गया। वो सात मास की है तो उसे वो सब सीन याद हैं अभी। बच्चा छोटा होता है तो उसकी मेमोरी बैक में जाती रहती है। सीन जो गहराई से उसके अर्न्तमन पर छप गये हैं उसे जल्दी नहीं भूलते, यही एक कारण है कि ये घबराई हुई रहती है। इसका समाधान बिल्कुल सम्भव है। आपको अपनी बच्ची के लिए कुछ अच्छे-अच्छे अभ्यास करने होंगे। आपने अगर राजयोग नहीं सीखा है तो आप राजयोग सीख लें। आप उसके सामने बैठें, उसे आत्मा देखें और उसे आत्मा देख गुड फीलिंग दें कि नहीं अब तुम हमारे पास पूरी तरह सुरक्षित हो। तुम तो भगवान की संतान हो। ये देह तो अलग है, तुम तो चेतन आत्मा हो, अजर,अमर, अविनाशी हो। किसी ने तुम्हें कष्ट भी दिया है तो अब तुम उन्हें क्षमा कर दो। अब तुम सुखी हो जाओ। तुम तो बहुत अच्छी हो। तुम तो बहुत पॉवरफुल हो। तुम्हारे साथ स्वयं भगवान है। इस तरह के थॉट उसे सवेरे दें, दोपहर में दें क्योंकि बच्ची तो सोई रहेगी, सोते हुए को ही दे सकते हैं। तो इससे उसका ये इफेक्ट खत्म हो जायेगा। और दूसरी चीज़ है, इसके लिए एक घंटा रोज़ राजयोग मेडिटेशन करना होगा, केवल 21 दिन तक। तो ये योग की शक्ति उस आत्मा को निर्भय करेगी। और अगर कोई विकर्म उसको याद आ रहा है, उसके कारण भय है, एक कारण ये भी है कि आत्मा ने बहुत ज़्यादा पाप कर लिए हों। क्योंकि मृत्यु के समय मनुष्य का सब्कॉन्शियस माइंड बिल्कुल क्लीयरली काम करने लगता है। तो जो-जो उसने किया वो सब मेमोरी में उभरने लगता है तो बहुत भयभीत होने लगता है मनुष्य। उसी भय में उसे यमदूत खड़े दिखते हैं, कष्ट दे रहे हैं। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं होता, वो उसके अपने मन की ही रचना होती है। तो ऐसे योगाभ्यास से उसके वो विकर्म नष्ट हो जायेंगे और उसके वायब्रेशन्स में बहुत परिवर्तन दिखाई देगा, उसके फेस से ही दिखाई देगा। बच्ची पीसफुल हो गयी है, उसके चेहरे पर खुशी है। घर में भी माहौल थोड़ा अच्छा रखना है। अच्छी टयून्स बजती रहें, अच्छे गीत बजते रहें, क्योंकि बच्चा जितना छोटा है वो इन सब वायब्रेशन्स को बहुत जल्दी ग्रहण करता है।

प्रश्न : मुझे प्रीमेच्योर बेबी हुई है उसके लिए क्या कुछ योग की विधि हो सकती है?

उत्तर : योग से तो सबकुछ अच्छा हो सकता है। क्योंकि प्रीमेच्योर जन्म जो होते हैं इसमें ब्रेन भी इन्कम्प्लीट रह सकता है। इसमें शरीर के कुछ अंग वीक रह सकते हैं। पूरी तरह से ग्रोथ नहीं होगी। किसी का कद छोटा रह जायेगा, बहुत कमज़ोरी रह जायेगी अन्दर में। ये भी वही कि मनुष्य के पास जो कार्मिक अकाउंट है, उसके कारण उसकी ये स्थिति आती है। आपको ये करना होगा कि उसको जो कुछ भी खिलायें-पिलायें चार्ज करके दें अभी। चार्ज करने का तरीका वही, चाहे पानी हो, दूध हो, भोजन हो जो कुछ भी या माँ ही अपना दूध पिलाती हो तो जब माँ भी अपना दूध पिलाती हो तो वो संकल्प करे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, ये अभ्यास करते रहें। तो दूध में वो वायब्रेशन्स बच्चे को जाते रहेंगे। और अगर बोतल से दूध पिलाया जाता है तो बोतल को दृष्टि देकर उसको भी 21 बार संकल्प कर दें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, फिर वो दूध बच्चे को दे-दें और वो पीता रहता है जैसे तो उसके द्वारा भी उसको एनर्जी जाती रहेगी और तीसरी चीज़ जो मोस्ट इम्पोर्टेंट है ब्रेन को दस-दस मिनट सवेरे-शाम एनर्जी देनी होगी और उसका तरीका हम हमेशा सिखाते हैं। दोनों हाथ मलते हुए तीन बार याद करेंगे, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे हाथों में बहुत पॉवरफुल एनर्जी वायब्रेट आउट होगी। तो आप हाथ मल के बेबी के सिर पर रख दें। एक मिनट रखेंगे और संकल्प करेंगे इस एनर्जी से इसका ब्रेन परफेक्ट हो जाये। और ऐसा दस बार करेंगे, सवेरे-शाम दस-दस बार करेंगे। ब्रेन को एनर्जी जायेगी। और चौथी बात, एक घंटा इनके लिए योगदान 21 दिन अवश्य कर दें ताकि जिस कारण से ये स्थिति बनी वो हट जाये और उनका इफेक्ट खत्म हो जाये। क्योंकि इन पाप-कर्मों का इफेक्ट चलता रहता है जीवन पर। उसको काटना, वो जो वायब्रेशन्स आ रहे हैं उसको कट ऑफ करना ये बहुत ज़रूरी होता है। तो एक घंटा योग इसी स्वमान से कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, पॉवरफुल योग करेंगे। तो आपकी बेबी को जो कठिनाई है वो सब समाप्त हो जायेगी।

प्रश्न : मैं नेपाल से राधिका हूँ। मैं चौदह साल से विद्यालय से जुड़ी हुई हूँ। मेरी दुकान पहले बहुत अच्छी चलती थी लेकिन अब बिल्कुल नहीं चल रही, क्या करें?

उत्तर : इसमें क्या होता है, कभी चलते-चलते मनुष्य के सामने पूर्व जन्मों के विकर्म आ जाते हैं और वो बस बाधा डालने लगते हैं। ये बहुतों के साथ होता है। बहुतों माना लाखों लोगों के साथ होता है। बिजनेस बहुत अच्छा चल रहा था अचानक सबकुछ खत्म हो गया। इसमें एक ही कारण है बस और कुछ नहीं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कोई-कोई कहता है कि किसी तांत्रिक ने क्रिया करा दी हमारी प्रोग्रेस देखकर। लेकिन मूल चीज़ यही है कि पास्ट के विकर्म सामने आ जाते हैं। तो इसके लिए चाहिए आप 21 दिन की योग भट्ठी कर लें। बहुत अच्छी तरह इसको महत्व दें। परिवार के सभी लोग इकट्ठे कर लें। विशेषकर जो बिजनेस में हैं। सब लोग इकट्ठा मेडिटेशन करें। दुकान में कर लें या अपने घर में ही कर लें, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ। इस स्वमान को सात बार याद करके आप एक घंटा पॉवरफुल मेडिटेशन करें। जब आप अपनी दुकान खोलें तब दुकान खोलते ही जब अन्दर प्रवेश कर रहे हैं तो याद करें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। चार-पाँच बार याद कर लें और फिर जब वहाँ बैठें तो बाबा का आह्वान कर लें और ग्राहकों का भी आह्वान कर लें। आओ भगवान आ गया है, तुम भी आ जाओ। पहले ही दिन से इम्प्रूवमेंट होने लगेगी। योग अभ्यास से वो विघ्न नष्ट हो जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना ' पीस ऑफ माइंड' और ' अवेकनिंग' चैनल

दादी प्रकाशमणि माउण्ट आबू इंटरनेशनल मैराथन

विश्व बन्धुत्व के लिए ज़मीन से पहाड़ तक 21 किमी दौड़े 3 हज़ार धावक

संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की स्मृति में हुआ मैराथन

शांतिवन। देश और दुनिया में विश्व बंधुत्व के लक्ष्य को लेकर आयोजित दादी प्रकाशमणि माउण्ट आबू इंटरनेशनल मैराथन में भारत सहित कई देशों के 3 हज़ार से ज़्यादा धावकों ने हिस्सा लिया। खास बात तो यह रही कि यह मैराथन समतल पर नहीं बल्कि ज़मीन से पहाड़ पर चढ़ाई का था। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन से प्रातः 6 बजे हरी झंडी दिखायी गयी। 21.09 किमी की दौड़ लगाते हुए प्रथम विजेता पाली निवासी कल्पेश देवासी ने मात्र 1 घंटे 22 मिनट में ही दूरी पूरी कर ली। वहीं दूसरे विजेता वरुण माउण्ट आबू तथा तीसरे स्थान पर रोहित टोंक विजयी रहे।

मैराथन का शुभारंभ करते हुए आबू रोड रेवदर विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि यह मैराथन वर्तमान समय पूरे विश्व में भाईचारा और एकता का संदेश देगा। इससे लोगों में सद्भावना का विकास होगा। आबू रोड पालिका चेयरमैन मगनदान चारण ने कहा कि आज ज़रूरत है कि हम इसे खेल की भावना से ही लें। इस तरह के आयोजनों से निश्चित तौर पर समाज में एकता और समरसता का विकास होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पियन सुनीता गोदारा, देलदर तहसीलदार हुक्मीचंद, सदर धानाधिकारी राजीव लाड, रोटरी क्लब के अजय सिंह, ब्र.कु. देव, ब्र.कु. भानू, ब्र.कु. सत्येन्द्र, ब्र.कु. अमरदीप, ब्र.कु. कोमल, ब्र.कु. मिश्रा व ब्र.कु. सचिन समेत कई लोगों ने हरी झंडी दिखाकर मैराथन को रवानगी दी।

कार्यक्रम में आबू रोड उपखण्ड अधिकारी वीरमाराम ने कहा कि शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए ऐसे आयोजनों की ज़रूरत है ताकि लोगों में जागरुकता आये। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रमुख ब्र.कु. करुणा भाई तथा कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि दादी प्रकाशमणि का सपना था कि पूरे विश्व में विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास हो। इसके लिए उनके स्मृति दिवस पर यह आयोजन किया जा रहा है और प्रतिवर्ष किया जाता है।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। राज्यपाल अब्दुल नजीर को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शांता बहन।

चेन्नई-तमिलनाडु। राजभवन में ब्रह्माकुमारीज़, ट्रांसजेंडर रिसॉर्स सेंटर,मंगयर मंगलम एंड राज भवन सेल्फ हेल्प ग्रुप द्वारा राज्यपाल थिरू आर.एन. रवि और लेडी गवर्नर श्रीमती लक्ष्मी रवि को राक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. बीना दीदी व ब्र.कु. देवी बहन। साथ हैं अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

अलीराजपुर-म.प्र.। वन कैबिनेट मंत्री नागर सिंह चौहान को राखी बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. माधुरी दीदी, ब्र.कु. ज्योति व ब्र.कु. लल्लू।

नीमच-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के पावन धाम सेवाकेंद्र पर रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में बायें से वैश्य महासम्मेलन के संभागीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ भाजपा नेता संतोष चोपड़ा, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्रह्माकुमारीज़ की सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, विधायक दिलीप सिंह परिहार, ब्र.कु. सुरेंद्र भाई, मालवा आज तक के प्रधान संपादक सुरेन्द्र सेठी, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष हेमन्त हरित तथा भाजपा मण्डल अध्यक्ष मोहनसिंह राणावत।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। बिलासपुर के होटल रेड डायमण्ड में हैण्ड ग्रुप के द्वारा आयोजित निःशुल्क मल्टीस्पेशलिटी स्वास्थ्य शिविर एवं रक्तदान शिविर के शुभारम्भ कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जाने पर ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी ने सम्बोधित किया तथा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल माननीय उप-मुख्यमंत्री अरुण साव सहित सभी मेहमानों को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा। बेलतरा क्षेत्र के विधायक सुशान्त शुक्ला, भाजपा के जिलाध्यक्ष रामदेव कुमावत, पूर्व महापौर किशोर राय आदि महानुभावों सहित 21 अन्य सामाजिक संगठनों से जुड़े लोग इस शिविर में मौजूद रहे। इस मौके पर अतिथियों के द्वारा स्मृति-चिन्ह देकर ब्र.कु. मंजू दीदी को सम्मानित किया गया। ब्र.कु. गायत्री बहन, ब्र.कु. उमा बहन व ब्र.कु. लता बहन भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

वैजयन्ती माला में आने की युक्ति

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि किसी व्यक्ति में सहनशीलता तो होती है लेकिन 60 प्रतिशत होती है। किसी में 80 प्रतिशत होती है। तो जो विजयी रत्न होंगे उनमें भी वो सद्गुण ज़्यादा होंगे।

एक दूसरा रहस्य सभी को मालूम रहे कि ये जो शिवबाबा के चुने हुए 108 रत्न हैं, दोनों को सभी ने समझ लिया 8 और 100 ये आत्मायें इस भारत में खास जहाँ-तहाँ हैं। एक जगह नहीं विदेशों में भी थोड़ी-थोड़ी हैं। इनका क्या इफेक्ट होगा, जब बहुत ज़्यादा विनाशकाल होगा, जब जल भी बहुत तूफान करेगा, पाँचों तत्व भी फुल फोर्स से अटैक करेंगे, धरती भी बहुत तूफान करेगी, अर्थ क्वेक्स होंगे, उसमें आपदायें आयेंगी। अग्नि भी जलाकर नष्ट करने लगेगी। उस टाइम जहाँ ये एक-एक महान आत्मा होगी इनके वायब्रेशन्स से आस-पास के अनेक लोग सहारा अनुभव करेंगे, सुरक्षित हो जायेंगे और देह तो सभी को छोड़ना ही है। सहज देह छोड़ेंगे। तो बहुत सारी आत्मायें इनसे जुड़ी होंगी। ऐसे ही एक-एक अष्ट रत्न से भी, कई-कई विजयी रत्न भी जुड़े रहते हैं। ये सभी आत्मायें सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक इस विश्व के ड्रामा में हीरो एक्टर रहती हैं। धर्म के क्षेत्र में, राज्य के क्षेत्र में बाबा ने साफ कर दिया था। तुम्हारी राजाई त्रेतायुग में समाप्त नहीं हो जाती, कि प्रालब्ध पूरी हो गई। ये द्वापर से भी चलती रहती है। देखो द्वापर में इतिहास इस बात को दर्शाता है कि भारत जब बहुत बड़ा था, पाँच भागों में बंटा रहता था। तो पाँचों में से हरेक का कभी मगध का राजा होता था, उसको सम्राट की उपाधि दी जाती थी। अनेकों को महाराजाधिराज की उपाधि दी जाती थी। बड़े-बड़े राज होते थे सबके पास। एक तो करना बहुत मुश्किल होता था क्योंकि घोड़ों पर चलना होता था, रथों पर चलना होता था। इतने लम्बे-चौड़े राज को सम्भालना भी कोई सहज काम नहीं होता। तो राजाई चलती आती है।

सभी आत्मायें सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक इस विश्व के ड्रामा में हीरो एक्टर रहती हैं। धर्म के क्षेत्र में, राज्य के क्षेत्र में बाबा ने साफ कर दिया था। तुहारी राजाई त्रेतायुग में समाप्त नहीं हो जाती, कि प्रालब्ध पूरी हो गई। ये द्वापर से भी चलती रहती है।

इन 108 रत्नों में पहली 25 आत्मायें बहुत महान होती हैं। बहुत महान चमकते हुए सितारे, उनका इस सृष्टि चक्र में बहुत अधिक महत्व है। वो भी अनेकों के सहारे बन जाते हैं। उनकी उपस्थिति सेवाओं को भी बढ़ा रही है। क्योंकि सेवाओं की वृद्धि प्युरिटी व ज्ञान की गुह्यता के आधार पर, पालना के आधार पर, जिसने जितने अच्छे वायब्रेशन्स अपने यहाँ बनाये हैं ये सब आधारों से सेवा की वृद्धि होती रहती है। मैं तो साक्षी होकर देखता रहता हूँ जहाँ एक भी विजयी रत्न है, जिसको वहाँ के लोग नहीं जानते। वहाँ सेवा तेजी से बढ़ रही है। लेकिन वो अभी गुप्त रूप से हैं। समय आने पर बाबा उन्हें प्रत्यक्ष करेगा, उनके द्वारा साक्षात्कार करायेगा। तो ये बहुत सुन्दर कार्य चल रहा है। हम सभी को पुरूषार्थ करना है कि माया पर ज़रूर विजयी बनें। विजयी रत्न माना माया पर सम्पूर्ण विजयी। काम वासना पर सम्पूर्ण विजयी, क्रोध पर विजयी, लोभ पर, मोह पूरी तरह समाप्त, अहम तेरा-मेरा ये पूरी तरह समाप्त, इन पाँचों विकारों को छोड़ना जिस पर हम आगे चर्चा करते रहेंगे ये सूक्ष्म साधना की बात है। इसमें योग का बल भी बहुत चाहिए, इसमें ज्ञान का बल भी बहुत चाहिए, मनुष्य का मनोबल भी बहुत चाहिए तो इस कार्य में इन सभी चीज़ों में आगे बढ़ते चलें, जिनको भी विजयी रत्न बनना हो। सभी विकारों पर सम्पूर्ण विजय और विजयी रत्नों को कम से कम आठ घंटा डेली योगयुक्त जीवन तो बिताना ही होगा। और ये बैठकर नहीं करना है।

एक दो घंटा आप बैठेंगे बाकी कर्म करते हुए योगयुक्त जीवन बनायेंगे। ज्ञान चिंतन बहुत अच्छा होगा। तेरे-मेरे के लफड़ों में, टकराव में, झंझटों में ये आत्मायें नहीं रहेंगी। ऐसा पुरूषार्थ जो करेंगे वो विजय माला में आ जायेंगे। बाबा स्वयं अपनी शक्तियां देकर उन्हें तैयार कर रहा है। मन में उमंग तो है ही पर ईश्वरीय शक्तियां भी उनके साथ जुड़ी हुई हैं और ये कार्य आगे बढ़ रहा है और जल्द ही ये सब आत्मायें प्रख्यात हो जायेंगी।

'हमारी लाडो' प्रोजेक्ट की लॉन्चिंग के लिए उचित है यह आध्यात्मिक स्थान : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर पहुंचने पर आयोजित हुआ ' बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम

माननीय मंत्री ने पूरे कैम्पस का किया विज़िट

' हमारी लाडो' प्रोजेक्ट की लॉन्चिंग भी की

पानीपत-ज्ञान मानसरोवर(हरियाणा)।
ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर के दादी चंद्रमणि यूनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम में माननीय मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के पहुँचने पर 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास विभाग के तहत आयोजित किया गया।
दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करने के पश्चात् माननीय मुख्यमंत्री ने अपनी शुभकामनायें देते हुए कहा कि आज मुझे बहुत खुशी हो रही है कि 'हमारी लाडो' प्रोजेक्ट के तहत 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' की लॉन्चिंग के लिए एक आध्यात्मिक स्थान ज्ञान मानसरोवर को चुना गया है। ऐसे स्थानों पर आकर मुझे बहुत अच्छा लगता है। माननीय मुख्यमंत्री ने अपने कर कमलों से 'हमारी लाडो' प्रोजेक्ट की भी लॉन्चिंग की।
कार्यक्रम में असीम गोयल,महिला एवं बाल विकास मंत्री, कृष्ण लाल पंवार,मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट,राज्य सभा, महिपाल ढांडा,राज्य पंचायत मंत्री,हरियाणा एवं प्रमोद विज,विधायक,शहरी पानीपत भी शामिल हुए। इसके साथ ही इस मौके पर श्रीमती अमनीत पी.कुमार,आई.ए.एस.,कमिश्नर एंड सेक्रेट्री,महिला एवं बाल विकास विभाग, श्रीमती मोनिका मलिक,आई.ए.एस. डायरेक्टर,महिला एवं बाल विकास विभाग,पंचकुला, श्रीमती राज बाला कटारिया, श्रीमती पूनम रमन,जॉइंट डायरेक्टर,महिला एवं बाल विकास,पंचकुला, वीरेंदर दहिया,आई.ए.एस. उपायुक्त,पानीपत तथा अजीत सिंह शेखावत,पुलिस अधीक्षक सहित राज्य के 9 जिलों से 3500 से अधिक महिलाओं एवं उनके अभिभावक मौजूद रहे। राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में महिलाओं को बहुत ऊँचा स्थान दिया जाता है। जितने भी हमारे सेवाकेन्द्र हैं, उन सब की संचालिका बहनें ही हैं। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने माननीय मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को रक्षासूत्र बांधा एवं शॉल पहनाकर तथा ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित भी किया। साथ ही सभी अतिथियों को भी सम्मानित किया गया। ब्र.कु. सोनिका बहन,ओआरसी ने महिला सशक्तिकरण पर सुंदर विचार प्रस्तुत किये।

दोपहर के सूर्य की तरह तेजोमय है युवा : ब्र.कु. आदर्श दीदी

युवा दृढ़ निश्चय से कर सकता है हर कार्य - ब्र.कु. प्रहलाद भाई

ग्वालियर-माधवगंज(म.प्र.)।
ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर प्रभु उपहार भवन में युवाओं के लिए 'सकारात्मक कार्य द्वारा युवा सशक्तिकरण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में युवा प्रभाग के कार्य समिति सदस्य ब्र.कु. प्रहलाद भाई ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को सकारात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करना तथा सकारात्मकता के अभ्यास से आत्मविश्वास को बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि युवाओं को निरंतर आगे बढ़ने के लिए दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है। दृढ़ निश्चय से युवा हर उस मुकाम तक पहुँच सकता है जहाँ वह पहुंचना चाहता है। सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आदर्श दीदी ने सभी को अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि युवा दोपहर के सूर्य की तरह तेजोमय है। उसके अंदर बहुत ऊर्जा होती है। उस पर दो तरह की ज़िम्मेदारी है, एक बुजुर्गों की और एक आने वाली पीढ़ी की। इसीलिए युवाओं को अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाना चाहिए और यह तभी संभव है जब हम परमात्मा की याद में रहते हैं और आध्यात्मिक विचारों से जुड़े रहते हैं। दीदी ने सभी युवाओं को राजयोग ध्यान के बारे में बताते हुए उसके फायदे बताये तथा उसका अभ्यास भी कराया। साथ ही दीदी ने सभी युवाओं को नशा मुक्त भारत अभियान के तहत कभी नशा न करने तथा समाज को नशा मुक्त करने में योगदान देने की शपथ भी दिलाई।
कार्यक्रम में ब्र.कु. सुरभि, ब्र.कु. रोशनी, ब्र.कु. पवन, ब्र.कु. हर्षित, सौरभ, ध्रुव सहित अनेकानेक युवा शामिल रहे।

समाजसेवी अंकित शर्मा ने शुभकामनायें देते हुए कहा कि मुझे यहाँ आकर सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। संस्थान का हर व्यक्ति युवा दिखाई देता है क्योंकि सभी के चेहरों पर मुस्कान रहती है। हर व्यक्ति अपने आप में विशेष है, ऐसा समझें तो हर कोई अपने जीवन को सुंदर बना सकता है।

युवाओं को सशक्त बनाने के लिए ' इम्पैक्ट' का सफल आयोजन

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)।
अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में सकारात्मक कार्य के द्वारा युवाओं को सशक्त बनाने हेतु 'इम्पैक्ट' कार्यक्रम का ब्रह्माकुमारीज़ ब्लेसिंग हाउस सेवाकेंद्र में आयोजन किया गया। इस मौके पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका एवं ब्रह्माकुमारीज़ प्रशासक एवं मीडिया प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी ने सैकड़ों की संख्या में उपस्थित युवाओं को राजयोग की अनुभूति कराकर परमात्मा से सम्बंध जोड़ने की विधि से परिचित कराया। साथ-साथ हमेशा रिलैक्स और रीचार्ज रहने के टिप्स दिए और नशामुक्त रहने की प्रतिज्ञा भी कराई।

इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों एवं युवाओं को अंगवस्त्र पहनाकर किया सम्मानित।

ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. डॉ. रावेन्द्र ने ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग के प्रोजेक्ट 'इम्पैक्ट' के कार्य और उद्देश्य के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उद्योगपति,लाइफ कोच,मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. राजीव अग्रवाल ने युवाओं के लिए अपने प्रभावशाली उद्बोधन में कहा कि समस्याओं से घबराना नहीं है बल्कि समस्याओं से सीख कर आगे बढ़ना है। वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार शरबानी बनर्जी ने कहा कि निर्णय लेने में युवाओं को बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। अभेद्य नामक संस्था के संस्थापक अमिताभ सोनी ने कहा कि युवाओं को अपने जीवन में सही मार्गदर्शन को अपनाने की ज़रूरत है। प्रदेश मीडिया सह प्रभारी भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा,मध्य प्रदेश सुनील साहू ने कहा कि यदि युवा अपने जीवन में आध्यात्मिक विचारों को लेकर चलता है तो निश्चित है कि वह सफलता प्राप्त करेगा।
सोहन दीक्षित,जर्नलिस्ट ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि युवाओं को अपने जीवन में की हुई गलतियों को न दोहराने का प्रयास करना चाहिए। ब्र.कु. नमिता बहन,आई.टी. प्रोफेशनल एवं डॉ. श्रीनाथ अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे व युवाओं को शुभकामनाएं दी।

योग को हमारी यूनिवर्सिटी में भी शामिल किया जायेगा : डॉ. टिंबडीया

प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के मानसिक एवं चारित्रिक उत्थान के लिए प्रशिक्षकों का त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम.....

मेहसाणा-गुज.। खेती करें तो प्रेम से करें, दिल से करें। सकारात्मक विचारों से खेती करेंगे तो उस उपज से खाना पकाने वाले एवं खाने वाले में भी सकारात्मकता आयेगी। यह सकारात्मकता योग सीखने से आयेगी। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के गॉडली पैलेस सेवाकेंद्र में 'राजऋषि गोकुल गाँव प्रकल्प' के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षकों के त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए गुजरात नेचुरल फार्मिंग साइंस यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. सी.के. टिंबडीया ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि योग को हमारी यूनिवर्सिटी में भी शामिल किया जायेगा। हम पहले स्टूडेंट को योग करायेंगे बाद में पढ़ाना प्रारंभ करेंगे। उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक विशिष्ट कार्यक्रम है। जो काम सरकार को करना चाहिए वो ये संस्था कर रही है।

ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा मेहसाणा की राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि ग्रामीणों के जीवन में समृद्धि आए, उनका सर्वांगीण विकास हो, इस उद्देश्य से इस 'राजऋषि गोकुल गाँव प्रकल्प' ट्रेनिंग का आयोजन किया गया है। देश की मांग है– सात्विक एवं पौष्टिक अन्न। उसके लिए प्राकृतिक यौगिक खेती करने हेतु किसानों को जागरुक करेंगे। अतः ट्रेनिंग में आये हुए हरेक को ट्रेनिंग लेकर कम से कम एक गाँव पसंद कर उसका सर्वांगीण विकास करने का लक्ष्य रखना है। कार्यक्रम में श्याम प्रतापसिंह राठौड, सरपंच,जाहोता ग्राम पंचायत,राजस्थान, मल्टी स्टेट स्किल डेवलपमेन्ट के एम.डी. सुरेश भाई पटेल, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के एग्ज़ीक्यूटिव मेम्बर ब्र.कु. विनु आदि ने भी अपनी शुभकामनाएं दी। तपोवन आबूरोड,ब्रह्माकुमारीज़ से आये राजऋषि गोकुल ग्राम प्रकल्प के प्रणेता ब्र.कु. चंद्रेश ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के एग्ज़ीक्यूटिव मेम्बर,कलोल के ब्र.कु. जिग्नेश ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की एग्ज़ीक्यूटिव मेंबर भीनमाल राज. की ब्र.कु. गीता बहन ने किया। गुजरात सहित कुछ अन्य राज्यों से लगभग 50 ब्र.कु. बहनों एवं भाइयों ने इस ट्रेनिंग प्रोग्राम का लाभ लिया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd Sep, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org